RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

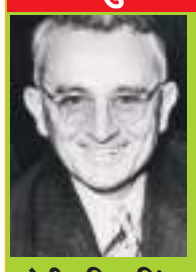

हमारी थकान काम की वजह से नहीं होती बल्कि चिंता, निराशा और असंतोष से होती है।
डेल कार्नेगी

वर्ष-04, अंक - 07 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 18 नवम्बर 2021 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

म.प्र. में कोरोना के सभी प्रतिबंध खत्म

भोपाल। म.प्र. के लोगों के लिए अच्छी खबर आई है, अब मध्यप्रदेश में कोरोना के कारण लगे सभी प्रतिबंध खत्म कर दिए गए हैं। जिसके निर्देश खुद सीएम शिवराज ने दिए हैं। अभी तक 300 लोगों को ही एक जगह बुलाने की अनुमति थी, अब कितने भी मेहमान बुला सकते हैं। इसके साथ ही मेलों पर लगी रोक भी हट जाएगी, वहीं नाइट कर्फ्यू भी नहीं रहेगा।

इसके अलावा सिनेमा हॉल, स्विमिंग पूल, जिम, योग सेंटर, रेस्टोरेंट, क्लब अब 100 प्रतिशत क्षमता से खुल सकेंगे। इस संबंध में सरकार ने बुधवार को फैसला लिया है। सीएम ने कहा कि, प्रदेश में कोरोना में लगातार कमी आ गई है. वैक्सीन भी लगाई गई है, ऐसे में प्रतिबंधों का मतलब नहीं बनता।

वैक्सीनेशन होगा जरूरी

मंत्रालय में सीएम शिवराज की अध्यक्षता में हुई बैठक में भले ही सारी छूट दे दी गई हों, लेकिन इसमें कोरोना वैक्सीनेशन से संबंधित सभी नियम लागू रहेंगे। हॉस्टल में 18 वर्ष से ऊपर के छात्र-छात्राओं और सभी स्टाफको कोरोना के दोनों डोज लगवाना अनिवार्य होगा। सिनेमा हॉल स्टाफको भी वैक्सीन के दोनों डोज लगना जरूरी है। मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना बेहद जरूरी होगा।

रैली में 3 लाख और शादियों में 300

आम और खास में दोहरा मापदंड क्यों...?

माही की गूंज झाबुआ, संजय भटेवरा।

'निज पर शासन फिर अनुशासन' शायद यह वाक्य सुविचार के रूप में दीवार पर लेखन तक ही सीमित रह गया है। वर्तमान में राजनेताओं के प्रति आमजन में आदर भाव का खत्म होना इसी का परिणाम है कि, नेता कहते कुछ और है और करते कुछ और हैं। जबकि महाभारत कालीन युग में एक बार गुरुजी ने पांडवों और कौरवों को एक वाक्य याद करने को कहा था कि, 'सदा सत्य बोलना चाहिए' जिनको युधिष्ठिर चार-पांच दिन तक याद ना कर पाए तो गुरु जी ने युधिष्ठिर को सजा देते हुए कहा कि इतना छोटा सा वाक्य तुम चार-पांच दिन बाद भी याद नहीं कर पाए। जिस पर युधिष्ठिर ने कहा कि, जब तक मैं स्वयं सच बोलने न लग जाऊ तब तक इस वाक्य की सार्थकता नहीं हो सकती है।

कुछ ऐसा ही प्रसंग राष्ट्रपिता गांधी जी के साथ भी हुआ था, जब एक महिला अपने बालक को गुड़ खाने की बात को लेकर आई थी और गांधी जी से बोला कि, आप इस बालक को गुड़ खाने का मना कर दो। उस वक्त स्वयं गांधीजी गुड़ खा रहे थे इसलिए गांधी जी ने उस महिला से कहा कि, आप इसे चार-पांच दिन बाद लेकर आना। आशय यह है कि, सरकार जो आदेश निकाले पहले वो स्वयं उसका पालन करें....!

15 नवंबर को क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की जयंती मनाने के लिए भोपाल में कार्यकर्ताओं का महाकुंभ आयोजित किया गया। भोपाल से लेकर जिला, ब्लाक और ग्रामीण स्तर तक प्रशासन ने इस आयोजन के लिए कड़ी मेहनत की और कार्यक्रम सफल रहा। जिसके लिए मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री सहित शासन और प्रशासन के तमाम जिम्मेदार अधिकारी.... कर्मचारी.... कार्यकर्ता... बधाई के पात्र हैं; लेकिन उसी दिन प्रदेश स्तर से एक आदेश निकाला जाता है, जिसमें मध्य प्रदेश में आगामी शादियों के सीजन के लिए गाइडलाइन जारी की जाती है। जिसमें कहा गया है कि, शादियां में अधिकतम मेहमानों की संख्या 300 रहेगी तथा शादियों के लिए एसडीएम की अनुमति आवश्यक होगी। जिसको लेकर आम जनता के मन में एक ही सवाल उठ रहा है कि, आम व खास के लिए शासन का ऐसा दोहरा रवैया क्यों....?

निश्चित रूप से कोरोना की पहली और दूसरी लहर का घातक परिणाम न केवल आम जनता ने बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था ने झेला है और जब तक कोरोना पूरी तरह से समाप्त नहीं हो जाता तब तक सावधानी जरूरी है लेकिन सावधानी की अपील केवल आम जनता तक ही सीमित क्यों....? क्या राजनीतिक कार्यक्रमों की भीड़ से कोरोना संक्रमण नहीं फैलता है...? और आम जनता के छोटे-मोटे सामाजिक कार्यों में तेजी से फैलता है....? चुनाव की रैलियों में कोरोना असरदार नहीं रहता है....? लेकिन किसी धार्मिक रैलियां या समारोह में व्यापक रूप से फेल सकता है...?

शायद ऐसे ही दोहरी मानसिकता वाले कार्यों आदेशों से राजनेताओं के प्रति आमजन में आदर का भाव कम होता जा रहा है। यही नहीं आम जनता का यह भी कहना है कि शादियों या अन्य समारोह में प्रथम निमंत्रण श्री गणेश जी को किया जाता है और परंपरा अनुसार पहली पत्रिका श्री गणेश जी के मंदिर में चढ़ाई जाती है। लेकिन शासन के आदेश के बाद परमिशन अनुमति के लिए पहली पत्रिका अनुविभागीय अधिकारी को देना होगी। सरकारी सिस्टम में अंदर तक दखल रखने वालों का कहना है कि, अनुमति के नाम पर भी कमीशन का खेल चालू हो जाएगा जिसमे अन्नतः पीसना आम आदमी को ही है। पिछले 2 वर्ष से व्यापार धंधे में चोट खाया आम आदमी अब मांगलिक कार्यक्रमो में अनुमति के लिए इधर-उधर भटकेगा।

वही आम आदमी का कहना है कि, अगर शासन कोरोना के प्रति इतना ही सजग है, तो सरकारी गाइडलाइन शासकीय व राजनीतिक कार्यों के लिए भी लागू की जाना चाहिए। वरना दो साल से परेशान आम जनता को भी अब कोरोना के नाम पर अनावश्यक परेशान नहीं किया जाना चाहिए। नियम सभी के लिए समान रूप से न केवल बनाना चाहिए वरन् उसका पालन भी समान रूप से सभी के लिए अनिवार्य किया जाना चाहिए।

भारी विरोध के बाद सरकार ने यू टर्न लेते हुए सारे कोविड-19 के प्रतिबंध देर षाम हटा लिए, जिसकी जानकारी स्वयं मुख्यमंत्री ने मीडिया को दी।

दोबारा खुला करतारपुर कॉरिडोर

नई दिल्ली। पाकिस्तान में स्थित सिखों के सबसे पूजनीय तीर्थस्थलों तक जाने के लिए करतारपुर साहिब गलियारे को बुधवार से एक बार फिर से खोला जा रहा है। वर्ष 2019 में इस गलियारे का उद्घाटन हुआ था लेकिन अब इस यात्रा को करने के लिए श्रद्धालुओं को कुछ नियमों का पालन करना होगा। मसलन सिर्फवही लोग पाकिस्तान जा सकते हैं, जिन्होंने कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज ली है। इसका मतलब यह भी है कि, सभी श्रद्धालुओं को अपने साथ निगेटिव आरटी-पीसीआर रिपोर्ट और कोविड टीकाकरण सर्टिफिक्रेट रखना होगा। करतारपुर साहिब कॉरिडोर पाकिस्तान स्थित गुरुद्वारा दरबार साहिब को भारत के गुरुदासपुर में मौजूद सिखों के पवित्र पूजनीय स्थल डेरा बाबा नानक से जोड़ता है। करतारपुर साहिब गुरुद्वारे का सिखों के लिए इसलिए भी महत्व है क्योंकि इसी गुरुद्वारे में उनके गुरु नानक देव ने जीवन के आखिरी बरस बिताए थे और देह त्यागी थी। हालांकि, यह कॉरिडोर वर्ष 2019 में ही खुल गया था लेकिन महज चार महीने के अंदर ही कोरोना की वजह से इसे मार्च 2020 में बंद कर दिया गया था।

सहकारी बैंक घोटाले में एक पर एफआईआर, 6 निलम्बित

भोपाल। मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले की पिछोर तहसील में संचालित केंद्रीय सहकारी बैंक घोटाले में एक कर्मचारी को बर्खास्त कर दिया गया, जबकि अधिकारी के खिलाफएफआईआर दर्ज की गई है। इसके अलावा छह अधिकारी कर्मचारियों को सस्पेंड कर दिया गया है। शाखा प्रबंधक अरविंद सिंह तोमर, पीके श्रीवास्तव, लिपिक कुमारी शिखा गुप्ता, कुमारी लवली नाडिया, प्रशांत रामपुरिया, राघवेन्द्र पाल और भृत्य देवेन्द्र शर्मा को निलंबित किया गया है। यह सभी अधिकारी-कर्मचारी सहकारिता आयुक्त द्वारा गठित विशेष ऑडिट टीम की जाँच में प्रथम दृष्टया बैंक राशि में हेरा-फेरी और गबन करने के दोषी पाए गए हैं। पिछोर शाखा की पूर्व में हुई जाँच में कुछ को दोषी पाया गया और उनके विरुद्ध कार्रवाई की गई थी। इसके बाद प्राप्त शिकायत के आधार पर सहकारिता आयुक्त के द्वारा आडिट के लिए विशेष टीम गठित कर फिर से आडिट करवाया गया।

ऑनलाइन ड्राइविंग लाइसेंस मामले में हाई कोर्ट ने नोटिस किया जारी

जबलपुर। ऑनलाइन ड्राइविंग लाइसेंस के मामले में जबलपुर हाई कोर्ट ने मध्य प्रदेश के उच्च न्यायालय ने भारत सरकार, मध्यप्रदेश शासन, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग विभाग के सचिव, मध्य प्रदेश परिवहन विभाग के प्रमुख सचिव एवं परिवहन आयुक्त को नोटिस जारी करके 4 सप्ताह के भीतर जवाब पेश करने के निर्देश दिए हैं। लाइसेंस की प्रक्रिया में कमियों को लेकर एक जनहित याचिका दाखिल की गई है।

दुरुपयोग की संभावना

मुख्य न्यायाधीश रवि मलिमठ व जस्टिस विजय कुमार शुक्ला की युगलपीठ के समक्ष मामले की सुनवाई हुई। इस दौरान जनहित याचिकाकर्ता शांति नगर, दमोहनाका, जबलपुर निवासी सामाजिक कार्यकर्ता संजय शर्मा की ओर से अधिवक्ता समदर्शी तिवारी ने पक्ष रखा। उन्होंने दलील दी कि, ऑनलाइन लर्नर लाइसेंस प्रक्रिया तो लागू कर दी गई, लेकिन कमियों को दूर करने की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। लिहाजा, तमाम तरह की कमियों को दूर किया जाना आवश्यक है। इसके अभाव में यह प्रक्रिया प्रश्नवाचक बनी रहेगी। इसके दुरुपयोग की आशंका भी कायम रहेगी।

जनहित याचिका में कहा गया कि, केंद्र व राज्य शासन ने ऑनलाइन लर्नर लाइसेंस प्रक्रिया को तो गति दे दी, किंतु इंफ्रास्ट्रक्चर की दिशा में जिम्मेदारी पूरी नहीं की। मसलन, फेसीलिटेशन सेंटर व इलेक्ट्रानिक पोर्टल की सुविधा नहीं दी गई। ऐसा कोई फोरम नहीं बनाया, जिसके जरिए ऑनलाइन लर्नर लाइसेंस जारी करने की प्रक्रिया में आरटीओ द्वारा क्रास एग्जामिनेशन किया जा सके। मैनुअल से ऑनलाइन प्रक्रिया में परिवर्तन से पूर्व जो मैकेनिज्म दिया जाना चाहिए था, उसकी सर्वथा अनदेखी की गई। इस वजह से ऐसे लोगों को भी लाइसेंस जारी होने की आशंका बढ गई है, जो सड़क दुर्घटनाओं का सबब बन सकते हैं। ऐसा इसलिए भी क्योंकि राज्य सरकार बेहतर सड़कें मुहैया कराने की दिशा में असफल है। लिहाजा, ऑनलाइन लर्नर लाइसेंस प्रक्रिया अंतर्गत प्रापर सेटअप आवश्यक है।

एससी ने लखीमपुर घटना की जांच में तय किया जज का नाम

नई दिल्ली। यूपी के लखीमपुर खीरी में अक्टूबर में हुई हिंसा के मामले की जांच की निगरानी के लिए हाई कोर्ट के पूर्व जज का नाम सुप्रीम कोर्ट ने तय किया है। इस घटना की जांच की निगरानी का काम उच्च न्यायालय ने पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के पूर्व जज राकेश कुमार जैन को सौंपा है। इसके अलावा यूपी सरकार की ओर से गठित एसआईटी टीम में तीन आईपीएस अधिकारियों को भी शामिल किया गया है। इसके साथ ही अदालत ने कहा कि वह इस मामले की अगली सुनवाई चार्जशीट दाखिल किए जाने और जस्टिस जैन की ओर से रिपोर्ट सौंपे जाने के बाद ही करेगा।

सुप्रीम कोर्ट ने 3 वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों एसबी शिरोडकर, दीपेंदर सिंह और पद्मजा चौहान को एसआईटी पैनल में शामिल किया है। केस की सुनवाई के दौरान यूपी सरकार ने अदालत में कहा कि वह घटना में मरने वाले लोगों के परिजनों को मुआवजा दे रही है। हालांकि सरकार ने कहा कि इसमें उन लोगों की भी पिटाई के बाद मौत हुई है, जिन पर गाड़ी चढ़ाने का आरोप था। फिलहाल उन लोगों के परिजनों की मदद को लेकर कोई फैसला नहीं लिया गया है। शीर्ष अदालत ने सोमवार को ही यूपी सरकार से कहा था कि वह उन लोगों की मदद पर विचार करे, जिन तक अब तक कोई राहत नहीं पहुंची है।

इसके साथ ही कोर्ट ने कहा कि अब मामले की अगली सुनवाई एसआईटी की ओर से जांच की स्टेटस रिपोर्ट सौंपे जाने के बाद ही होगी। बता दें कि 3 अक्टूबर को लखीमपुर खीरी में किसान आंदोलनकारियों पर भाजपा समर्थकों की एक कार चढ़ गई थी, जिसमें 4 किसानों और एक पत्रकार की मौत हो गई थी। इसके बाद भड़की हिंसा में तीन लोगों की पिटाई से मौत हो गई थी। इस मामले में यूपी पुलिस ने अब तक 13 लोगों को गिरफ्तार किया है, जिनमें से एक केंद्रीय मंत्री अजय मिश्रा का बेटा आशीष मिश्रा भी है। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को मिश्रा की बेल अर्जी भी खारिज कर दी थी।

पीएम मोदी का भोपाल के बाद खजुराहो डोरा तय

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 19 नवंबर को दोपहर बाद ट्रांजिट विजिट पर खजुराहो पहुंचेंगे। यहां उनकी अगवानी मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान करेंगे। मोदी यहां सिर्फ 5 मिनिट रुक कर झांसी जाएंगे।

जम्मू-कश्मीर के पूर्व मंत्रियों व विधायकों ने दिया सामुहिक इस्तीफा

श्रीनगर। कई राज्यों में उठापटक का सामना कर रही कांग्रेस को अब जम्मू कश्मीर में बड़ा झटका लगा है। प्रदेश में कांग्रेस के पूर्व 4 मंत्रियों और तीन मौजूदा विधायकों ने पार्टी अध्यक्ष सोनिया गांधी को सामूहिक इस्तीफा भेजा है। इन नेताओं ने यह आरोप लगाते हुए इस्तीफा दे दिया है कि, पार्टी की राज्य में स्थिति खराब है और उस पर बात करने के लिए लीडरशिप की ओर से समय नहीं दिया जा रहा है। जानकारी अनुसार जिन विधायकों और पूर्व मंत्रियों ने पार्टी से इस्तीफा दिया है, वे जी-23 में शामिल नेता गुलाम नबी आजाद के करीबी हैं। गुलाम नबी आजाद कई बार कांग्रेस में अध्यक्ष के चुनाव और अन्य सुधार के लिए आवाज उठाते रहे हैं।

नेताओं ने इस्तीफे का लेटर सोनिया गांधी के अलावा राहुल गांधी और जम्मू कश्मीर प्रभारी रजनी पाटिल को भी भेजा है। इन नेताओं ने लीडरशिप पर पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाने का आरोप लगाया है। इस्तीफा देने वाले नेताओं ने जम्मू कश्मीर के प्रदेश अध्यक्ष जीए मीर पर भी निशाना साधा है।

गुलाम अहमद मीर पर सीधा निशाना साधते हुए नेताओं ने कहा कि, उनकी वजह से ही जम्मू-कश्मीर में आज पार्टी की हालत खराब है। बागी नेताओं ने कहा मीर के कमजोर नेतृत्व के चलते अब तक जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस के 200 नेता पार्टी से पलायन कर चुके हैं।

राहुल गांधी ने नहीं दिया बात करने का टाइम

हालांकि गुलाम नबी आजाद के ही करीबी नेता और पूर्व डिप्टी सीएम ताराचंद ने पूरे घटनाक्रम से दूरी बना ली है। इस्तीफा देने वाले नेताओं का कहना है कि, उनकी ओर से कई बार राज्य में पैदा हुई समस्याओं पर बात करने के लिए शीर्ष नेतृत्व को संदेश दिया गया, लेकिन कोई जवाब ही नहीं मिला। नेताओं ने कहा कि, उनकी ओर से करीब एक वर्ष से लीडरशिप से मुलाकात के लिए वक्त की मांग की जा रही थी, लेकिन टाइम ही नहीं दिया गया। यही नहीं नेताओं ने कहा कि, अगस्त में राहुल गांधी जब आए थे, तब भी उनसे मिलने का वक्त मांगा गया था, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला।

कुलगाम में दो ठिकानों पर 4 आतंकी ढेर

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर में सुरक्षाबलों को बड़ी कामयाबी मिली है। कुलगाम में दो अलग-अलग ठिकानों पर हुए एनकाउंटर में समाचार लिखे जाने तक 4 आतंकवादियों को मार गिराया गया। आईजी कश्मीर ने एनकाउंटरों की पुष्टि करते हुए कहा, कुलगाम के गोपलपुरा और पॉम्बई इलाके में ये एनकाउंटर हुआ है। वही पॉम्बई इलाके में मुठभेड़ हुई है।

दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले के पॉम्बई इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशेष जानकारी के आधार पर पुलिस और सेना की संयुक्त टीम ने इलाके को घेर लिया। तलाशी अभियान शुरू होते ही आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच गोलीबारी शुरू हो गई। जैसे ही सुरक्षा बल उस स्थान पर पहुंचे, जहां आतंकवादी छिपे हुए थे, वे भारी मात्रा में गोलीबारी की चपेट में आ गए, जिससे मुठभेड़ शुरू हो गई और चार आतंकियों को मौत के घाट उतार दिया गया। सुरक्षाबलों ने मारे गए आतंकवादियों के शव भी बरामद कर लिए हैं। इलाके में अभी 3-4 आतंकी और छुपे होने की संभावना है।

बता दें, भारतीय सेना ने मंगलवार को ही कहा था कि, सुरक्षाबल किसी को भी 'व्हाइट कॉलर' या सफेदपोश आतंकवाद के तौर पर काम करने की इजाजत नहीं देंगे। श्रीनगर मुख्यालय 15 कोर के जीओसी लेफ्टिनेंट जनरल डीपी पांडे ने कहा, जम्मू-कश्मीर में सफेदपोश आतंकवाद को पनपने नहीं देंगे। उन्होंने साफ किया कि, जो लोग कश्मीर में आतंकवाद की भर्ती और फंडिंग (पैसा, हैसियत, अपने परिवारों और बच्चों के लिए अच्छी नौकरी) के पीछे काम करते हैं, उनसे हमारे लोगों को सवाल पूछने चाहिए। जीओसी सोमवार को श्रीनगर के हैदरपोरा इलाके में सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ पर टिप्पणी कर रहे थे।

साइबर आतंकवादियों पर भी नजर

बता दें कि, जम्मू कश्मीर पुलिस और सेना साइबर आतंकवादियों पर भी नकेल कस रही है, जिन्हें सफेदपोश जिहादियों के रूप में भी जाना जाता है। पुलिस और सेना की नजरों में वे सबसे बुरे किस्म के आतंकवादी हैं, जो गुमनाम रहते हैं लेकिन वे युवाओं की सोच को प्रभावित कर बड़े नुकसान का कारण बनते हैं।

पूरी बारिश निकलने के बाद भी स्टॉप डेम पर नहीं लगे गेट

सिंचाई की उम्मीद लगाए बैठे किसानों के सामने बह गया पानी

माही की गूंज, पेटलावद।

नदी पुर्नजीवन योजना के अंतर्गत पेटलावद विकास खण्ड की कई ग्राम पंचायतों में चैक डेम और स्टॉप डेम निर्माण का कार्य करोडों रुपये की लागत से किया गया हैं। ग्राम पंचायतों में बने चैक डेमो की स्थिति से तो हर कोई वाकिफहैं लेकिन कई पंचायतो में इसी योजना में स्टॉप ड़ेम का निर्माण भी किया गया है जिनमे बारिश के अंतिम दौर से पहले गेट लगाए जाने थे ताकि पानी रुक सके और आस-पास के किसानों को सिंचाई के लिए एक-दो पानी की व्यवस्था हो सके। प्रशासन की लापरवाही कहे या निर्माण एजेंसी ग्राम पंचायत की, अब तक इन स्टॉप डेमो पर गेट नही लगे जिससे यहां रुकने वाला बारिश का पानी व्यर्थ ही बह गया और अब ये स्टाप डेम केवल देखने भर के लिए अनुपयोगी हो कर पड़े हैं। ग्राम पंचायत बामनिया में पाटरी नदी और मुल्थानिया ग्राम पंचायत में रेलवे लाइन के निकट स्टॉप डेम बने हुए है जहां आज तक गेट नही लगे, जिससे यहां पानी नही रूक पाया। ये आलम केवल बामनिया और मुल्थानिया पंचायत में ही नही विकास खण्ड की बाकी पंचायतो में जहा स्टॉप डेम बने हुए है वहां भी आज तक डेम पर गेट नही लग सके हैं।

बामनिया पाटडी नदी पर बना डेम।

मुल्थानिया पंचायत में बना स्टॉप डेम जहा गेट नही लगे।

फुटने का डर तो नही...?

विकास खण्ड में बने स्टाप डेम निर्माण की गुणवत्ता पर लगातार प्रश्न चिन्ह लगते आ रहे है। ऐसे में स्टॉप डेम पर गेट का नही लगना कही न कही घटिया निर्माण और भ्रष्टाचार की ओर इशारा कर रहे हैं। ग्राम पंचायतों ने डेम फुटने के डर से अब तक यहाँ गेट नही लगाये है, फ्लिहाल तो गेट नही लगने से विकास खण्ड में इस वर्ष स्टॉप डेम के आस-पास के किसानों को कोई लाभ शासन द्वारा करोड़ो खर्च करने के बाद भी नही मिल पायेगा।

डम्फर-जीप की टक्कर तीन लोग घायल

माही की गूंज, रायपुरिया/जामली

मंगलवार रात्रि 9 बजे जामली-रायपुरिया मार्ग पर जामली के समीप एक डंपर व बोलेरो जीप में आपस में भिड़ंत हो गई, जिसमें बोलेरो जीप में सवार तीन लोगों को चोट आई है, जिन्हें डायल हंड्रेड की मदद से आरक्षक सुरेश कार्ड एवं पायलट रजनी सिंगार के द्वारा पेटलावद स्वास्थ्य केंद्र पर पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों के द्वारा घायलों का उपचार किया गया, डंपर चालक मौके से फरार हो गया है। भिड़ंत मे दोनों ही वाहन क्षतिग्रस्त हुए हैं। गनीमत रही की टक्कर इतनी तेज गति से नही हुई जिससे कोई जनहानि नही हो हुई।

दीपावली मिलन समारोह आयोजित

माही की गूंज, थांदला।

किराना व्यापारी एसोसिएशन ने दीपावली मिलन समारोह आयोजित किया । कार्यक्रम में जिलें के संस्कृतिक आदिवासी नृत्य की प्रस्तुति ने सबका ध्यानाकर्षण किया। पुणे से सम्मोहन कलाकार नवनाथ गायकवाड़ ने युवाओं पर सम्मोहनी विद्या का प्रयोग कर अनेक करतब दिखाए। इस अवसर पर किराना एसोसिएशन अध्यक्ष अनिल भंसाली, उपाध्यक्ष द्वय मनोज नागर एवं प्रकाश राठौड़, सचिव विपिन नागर, कोषाध्यक्ष प्रफुल्ल पोरवाल, सहसचिव सुनील रामजी राठौड़ उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अर्पित लुणावत एवं संजय फूलफार ने किया।

सिस्टम की नाकामी के आगे पूरी जिंदगी अतिथि बना रहा सुदेश कुमरावत का निधन

माही की गूंज, पेटलावद।

शहर का युवा जो पूरे जीवन छोटे बच्चों को अतिथि शिक्षक के रूप में शिक्षा देता रहा इस उम्मीद से की कभी भी सिस्टम की मेहरबानी होगी और वो शिक्षक बन जायेगा लेकिन इस उम्मीद के पूरी होने से पहले सुदेश ने अपने प्राण केवल 8 दिन की बीमारी में त्याग दिए। हस्ट-पुस्ट सुदेश खेल और खिलाड़ियों से इस कदर जुड़ा था कि, किसी भी खेल के आयोजन में तत्पर होकर पहुँच जाता। नगर का हर खिलाड़ी सुदेश के व्यवहार और खेल भावना से परिचित था। ग्राउंड ही जिसका घर था, हंसमुख-मिलनसार सुदेश कुमरावत सोमवार को अल्पायु मे इस दुनिया को अलविदा कह गया। कुछ दिनों पूर्व बीमार हुआ सुदेश को परिवार वाले दाहोद ले गए, जहा किडनी में परेशानी बताई गई, वहां से बड़ौदा के हॉस्पिटल रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उन्होंने अन्तिम साँस ली। मंगलवार को पम्पावती नदी के पावन तट पर लोगों ने अपने आदर्श खिलाडी को नम आँखों से अन्तिम विदाई दी, हर आँख नम थी। बचपन से ही संघर्षशील रहे , बदनसीबी ने कभी उनका दामन ना छोड़ा, मास्टर डिग्री के साथ बीएड ट्रेंड होते हुए भी नौकरी नहीं मिल पाई। बेरोजगारी और परिवार की जिम्मेदारी के चलते और सिस्टम की लाचारी के आगे मात्र सात हजार की सैलरी वो भी वर्ष मे 9 माह अतिथि शिक्षक बन जिंदगी गुजार दी। अचानक जिंदगी के इस मौड पर जिंदगी भी दगा दे गई और पीछे छोड़ गये अपने तीन छोटे-छोटे बच्चे और पत्नि। नाकाम सिस्टम और घटिया पॉलिसी के आगे एक व्यक्ति पूरी जिंदगी अतिथि बन कर रह गया। सबसे बड़ी बात इस नौकरी के प्रति समर्पित युवा को विगत चार माह से वेतन तक नही दिया गया जो स्वयं के व्यय से अपने कर्तव्य पूर्ति के लिए निजी वाहन से 10 किलोमीटर दूर थांदला विकास खण्ड की स्कूल में पढ़ाने जाता था। आर्थिक तंगी से जूझ रहे परिवार और सहयोगी शिक्षक ने अंतिम समय से पहले शिक्षा विभाग के अधिकारी को सुदेश की गंभीर स्थिति से अवगत करवाते हुए चार माह का वेतन देने का निवेदन किया। विकास खण्ड के अधिकारी ने जिले के अधिकारी के आदेश निर्देश का हवाला देकर कोई सहयोग करने में असमर्थता जाहिर कर दी। आखिर उम्मीदो से भरा सुदेश सिस्टम के आगे हार कर दुनिया छोड़ गया, सुदेश की मौत उसके पीछे सैकड़ो सवाल छोड़ गई है, जो सीधे प्रशासन के लिए है जो लाखो रुपये के वेतन स्थाई कर्मचारियों को महीने की पहली तारीख पर दे देती है। जीवन मे संघर्ष कर मजबूरी में 5 से 7 हजार की नौकरी अतिथि शिक्षक के रूप में करने वाले शिक्षक को महीनों तक मामूली वेतन के लिए इंतजार करना पड़ता है।

मुनिराज रजतचन्द्र विजयजी मसा और मुनिराज जीतचन्द्र विजयजी मसा को दी भावभीनी विदाई

चातुर्मास समिति ने मुनिद्वय का आभार व्यक्त किया

माही की गूंज, झाबुआ।

स्थानीय श्री ऋषभदेव बावन जिनालय श्री राजेंद्र सूरी पौषधशाला मे चातुर्मास कर रहे मुनिराज रजतचन्द्र विजयजी और जीतचन्द्र विजयजी को चातुर्मास पूर्ण होने पर नम आँखों से मंगलवार को दी भावभीनी विदाई समारोह पूर्वक दी। समारोह का आयोजन प्रवचन भवन में किया गया। प्रारम्भ मे आचार्यश्री ऋषभचन्द्र सूरीश्वरजी मसा की तस्वीर पर समिति सदस्यों ने दीप प्रज्जवलित किया। वीर गणधर लब्धि तप के तपस्वियों ने वासक्षेप पूजा की। गुरु वंदना मनोहर छाजेड़ ने करवाई। मुनिश्री के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। आशीर्वचन देते हुए मुनिश्री रजतचन्द्र विजयजी ने कहा कि यह सम्पूर्ण चातुर्मास गुरुदेव श्री ऋषभचन्द्र सूरीश्वरजी मसा को समर्पित है। उनकी असीम कृपा से ही यह चातुर्मास सफल हुआ है। मुनिश्री ने चातुर्मास समिति अध्यक्ष सुभाषचन्द्रजी कोठारी और उनकी टीम की प्रशंसा करते हुए कहा कि टीम का संयोजन आपस में श्रेष्ट रहा है। श्रीसंघ का, तपस्वियों का और सभी संस्थाओ का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है।

इसके पश्चात सर्वप्रथम डा.प्रदीप संघवी ने कहा कि इस चातुर्मास से मुनिश्री की मधुरवाणी से जिनवाणी का श्रवण करने का अवसर झाबुआ श्रीसंघ को मिला है। चातुर्मास समिति अध्यक्ष सुभाष कोठारी ने चातुर्मास में हुए अनेक धार्मिक गतिविधियों का विवरण देते हुए मुनिद्वय का आभार माना। परिषद राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा कटारिया ने कहा कि आपके चातुर्मास से झाबुआ नगर में धर्म की गँगा बही है। संजय कांठी ने कहा कि इस चातुर्मास मे मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक बड़ी तपस्याएं हुई है। मधु कांठी ने स्तवन के माध्यम से विदाई गीत प्रस्तुत किया। मनोहर छाजेड़ ने कहा कि आपकी निश्रा मे प्रभु नेमीनाथजी, प्रभु सीमन्धर स्वामी की भावयात्रा संपन्न हुई जिससे समाज धन्य हुआ। श्री धर्म चन्द्र मेहता ने कहा कि मुनीश्री ने हमे 45 आगम की श्रेष्ठ जानकारी दी। अशोक कटारिया ने कहा कि धर्म की बारीकी का ज्ञान मुनिश्री ने करवाया। समिति सचिव उत्तम लोढ़ा ने तपस्वियों को मुनिश्री की प्रेरणा से तपस्या करने के लिये और चातुर्मास को सफल बनाने के लिये धन्यवाद दिया। हँसा कोठारी ने कहा कि हमें मुनिश्री के चातुर्मास से विशेष धर्म ज्ञान प्राप्त हुआ। मनोज मेहता ने चातुर्मास से समाज को नई दिशा मिली है। उषा किरण कोठारी, नेना मेहता, वीनस जैन, किरण मेहता , कविता कोठारी, प्रेरणा मेहता, टीशा कोठारी ने विदाई देते हुए स्तवन प्रस्तुत किया। धर्मचन्द्र महेता, अशोक राठौड़, अभय धारीवाल, मुकेश रूनवाल , सूर्या कांठी , निखिल भंडारी , बागमल कोठारी, योगेंद्र नाहर, विजय कटारिया, बालक स्पर्श रुनवाल आदि ने विचार प्रस्तुत किए। अंत में नन्हे नन्हे बच्चों ने सुंदर नाटिका के माध्यम से विदाई दी। संचालन मनोज जैन मनोकामना ने किया और आभार सचिव उत्तम लोढ़ा ने माना। बुधवार को मुनिद्वय ने श्री महावीर बाग बिहार किया और बहा आयोजित वार्षिक ध्वजा आरौहन कार्यक्रम मे नीश्रा प्रदान की। गुरुवार को श्री ऋषभदेव बावन जीनालय मे चातुर्मास की अंतिम चतुर्दशी पखी प्रतिक्रमण होगा। शुक्रवार को श्री ऋषभदेव बावन जिनालय के 44 शिखरो पर एक साथ ध्वजारोहन होगा। प्रभु वरघोड़ा निकलेगा। जिनालय मे सामुहिक खमासने और देव वन्दना की जाएगी। इसी दिन मुनिद्वय चातुर्मास समाप्ति पर स्थान परिवर्तन कर दोपहर श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जिनालय बिहार करेंगे।

शहर का बड़ा तालाब बहादुर सागर को स्वच्छ बनाने के लिए जनसहयोग जरूरी - कलेक्टर

माही की गूंज, झाबुआ। कलेक्टर सोमेश मिश्रा द्वारा शहर के बीचो-बीच स्थित बहादुर सागर तालाब की साफ-सफाई जो नगरपालिका के स्टॉफके द्वारा की जा रही है। इसका निरीक्षण करने 16 नवंबर को अचानक पहुंचे एवं यहां की साफ-सफाई एवं स्वच्छ जल हो ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। यहां पर गम्बुजिया मछली को भी डालने के निर्देश दिए। जिससे पानी स्वच्छ हो सके। यहां पर हो रही बडी मात्रा में जलकुंभी को भी हटाने के निर्देश दिए। इस दौरान नगरपालिका अध्यक्ष मन्नू बेन डोडिया, पार्षद पपीश पानेरी, पार्षद साबिर फिटवेल, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व झाबुआ एल.एन.गर्ग, मुख्य नगरपालिका अधिकारी एल.एस.डोडिया, स्वच्छता निरीक्षक जयसवाल उपस्थित थे। मिश्रा ने जनप्रतिनिधियों से चर्चा करते हुए कहा कि इतनी बडी मात्रा में जलकुंभी हटाना एक बडा काम है। इसे हम सभी जन सहयोग से हटाना चाहते है। इसके लिए एक समय का निर्धारण तत्काल किया जाए। इस तालाब के सौंदर्यकरण के लिए तत्काल लाईट, बैंच, जाली, फव्वारा लगाए जाए। इसके अतिरिक्त जो जलकुंभी निकाली जाएगी उसे टेऊचिंग ग्राउण्ड पर एकत्र कर उसकी खाद्य के रूप में निर्मित की जाए। सोंदर्यकरण करने के लिए एक डीपीआर तत्काल बनाकर प्रस्तुत किया जाए।

20 नवंबर को आवास दिवस मनाया जाएगा

माही की गूंज, झाबुआ।

मध्यप्रदेश शासन पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग भोपाल के निर्देशानुसार जिला पंचायत मुख्यालय, जनपद पंचायत मुख्यालय तथा ग्राम पंचायत स्तर पर प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अंतर्गत दिनांक 20 नवंबर 2021 को आवास दिवस के आयोजन करने के निर्देश दिए गए हैं। इस संबंध में आपको ज्ञात होगा की प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण का शुभारंभ दिनांक 20.11.2016 को माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा किया गया था। जिसका मुख्य उद्देश्य वर्ष 2022 तक सबके लिए आवास है। आवास दिवस का आयोजन जिला जनपद एवं ग्राम पंचायत स्तर पर आयोजित किया जाना है। इस आयोजन में प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना के हितग्राहियों का उन्नमुखी करण एवं प्रशिक्षण प्रदान करना जिससे मुख्य रूप से आवास के विभिन्न मॉडल डिजाईन से परिचय करना है। आवास में लगने वाली सामग्री की गुणवत्ता की जानकारी दी जाना है। हितग्राहियों को ग्राम पंचायत क्षेत्र में निर्मित प्रधानमंत्री आवास योजना मॉडल आवास का भ्रमण कराना है। योजना के हितग्राहियों को स्थानीय बैंक अधिकारियों से आपसी चर्चा आयोजित करना है। जिससे बैंकर्स आसानी से लोन दे सकें। आवास दिवस के आयोजन में भूमि पूजन अथवा गृह प्रवेश आदि का आयोजन किया जावे। इस आयोजन में जनप्रतिनिधियों जिसमें माननीय सांसद महोदय, माननीय विधायक महोदय एवं अन्य जनप्रतिनिधियों को सामिल किया जाएगा।

लोक अदालत को सफल बनाने प्री-सिटिंग बैठक का हुआ आयोजन

माही की गूंज, झाबुआ। 11 दिसम्बर को जिला न्यायालय परिसर झाबुआ, तहसील न्यायालय पेटलावद एवं थांदला में वर्ष की अंतिम नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। जिसकी तैयारी हेतु बुधवार को प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण झाबुआ मोहम्मद सैय्यदुल अबरार के मार्गदर्शन एवं अपर जिला न्यायाधीश/सचिव लीलाधर सोलंकी की अध्यक्षता में न्यायालय परिसर झाबुआ में स्थित एडीआर सेंटर भवन में अधिक -से-अधिक प्रिलिटिगेशन एवं लंबित प्रकरणों को रखे जाने एवं लोक अदालत के सफल आयोजन हेतु अभिभाषक संघ, बीएसएनएल विभाग, नगर पालिका, विद्युत विभाग एवं समस्त बैंक प्रबधंकों के साथ प्री-सिटिंग बैठक आयोजित की गई। जिसमें लोक अदालत के माध्यम से अधिक-से-अधिक राजीनामा के आधार पर निराकरण कराने हेतु विचार-विमर्श किया गया। लोक अदालत में बैंक वसूली, बिजली बिल वसूली, नगरपालिका कर वसूली एवं बीएसएनएल बिल वसूली आदि के मामले रखे जाएंगे। जिसमें पक्षकारों को बकाया राशि जमा करने पर नियमानुसार छूट प्राप्त रहेगी। बैठक में विभागों से आए अधिकारीगण उपस्थित रहें।

भाजपा नेता प्रमोद मोदी की माता जी का निधन

माही की गूंज ,पेटलावद। पेटलावद महावीर कालोनी निवासी अनोखीलाल मोदी की धर्मपत्नी और भाजपा नेता प्रमोद मोदी, प्रवीर, अनिल मोदी की माताजी श्रीमति प्रभावती मोदी का सोमवार को निधन हो गया। जिनका अंतिम संस्कार मंगलवार को पम्पावती मुक्तिधाम पर किया गया जहा नगर के वरिष्ठ नागरिकों ने दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

माही डैम से किसानों का धरना प्रदर्शन 9 दिन बाद हुआ समाप्त

8 सदस्यीय कमेटी का गठन, नहर शुरू होने से किसानों को मिली राहत

माही की गूंज, झकनावदा।

ग्राम चारण कोटडा माही डैम पर जमीन के उचित मुआवजे, पुनर्वास पट्टा देकर स्थापित करने सहित कई मांगो को लेकर धरने पर 8 नवम्बर को बैठे ग्रामीणों का धरना प्रशासन के आश्वासन के बाद मंगलवार को समाप्त हो गया है । किसानों ने अपनी मांगों को लेकर शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन किया एवं पुलिस के द्वारा भी समय-समय पर धरना पर बैठे लोगों से चर्चा की जाती रही है लेकिन प्रशासन की और से कोई जबाबदार किसानों को आश्वासन देने नही पहुँचा तो किसान अपनी मांगों को लेकर उग्र होते दिखे। रबी की फसल पूरी तरह इस क्षेत्र में नहरों से मिलने वाले पानी पर निर्भर है और माही परियोजना विभाग की ओर से नहर में पानी छोड़ने की तारीख जारी कर दी थी जिसके अनुसार क्षेत्र के किसानों ने गेंहू की बोवनी कर दी थी। किसानों के धरने के कारण नहर में पानी नही छोड़ा जा रहा था जिससे किसानों की चिंता बढ़ रही थी, सोमवार को किसान संघ ने प्रशासन को थांदला-बदनावर मार्ग जाम कर नहर पर धरने पर बैठे किसानों की मांगों को मान कर नहर में पानी छोड़ने के लिए आंदोलन की धमकी दी थी। जिसके बाद प्रशासन हरकत में आया और मंगलवार को अनुविभागीय अधिकारी पेटलावद सहित माही परियोजना के अधिकारियों ने धरना स्थल पर पहुँच कर किसानों की मांगों को सुनकर दो माह में निराकरण का आश्वासन देते हुए 8 सदस्य टीम का गठन कर ,किसानों की मांगों के उचित निराकरण करने को कहा गया हैं, जिसके बाद किसानों ने अपना धरना वापस लिया।

किसानों ने कहा है कि, यदि दो माह में हमारी मांगो का निराकरण नही हुआ तो फिर से धरना प्रदर्शन किया जाएगा। धरना समाप्त होने के बाद माही परियोजना के अधिकारियों ने डेम के गेट नहर के लिए खोल दिये। नहरों में पानी आने से किसानो के चहरे खिल गए, बुधवार तक नहर का पानी सारंगी-करवड़ क्षेत्र तक पहुँच चुका था जिससे नहर से सिंचाई करने वाले किसानों ने राहत की सांस ली।

पुलिस हॉर्न वाली गाड़ी में आए लोगों ने युवती से की छेड़छाड़, सगाई करने वाले परिवर को भी दे रहे धमकी

पूर्व में भी हो चुकी है युवती के साथ घटना, पहले आवेदन पर भी नहीं हुई कार्रवाई

माही की गूंज, पेटलावद।

ग्रामीण क्षेत्रों में आपसी सगाई सम्बंध जोड़ने और टूटने के मामलो में विवाद होना सामान्य है, लेकिन आदिवासी परंपरा का हवाला देकर कई बार दोनों पक्ष कानून से भी बड़े हो कर कानून हाथ मे लेकर मामले अपने स्तर पर निपटाते है। पुलिस भी ऐसे मामलो में केवल दोनों पक्षो में आपसी लेन-देन और आपसी सहमति से मामला निपटाने के पक्ष में ही रहती हैं। जिनका फायदा कानून हाथ मे लेने वाले उठा कर अपने स्तर से ही निराकरण करने में विश्वास करते हैं।

रायपुरिया थाना क्षेत्र के ग्राम मनासिया में ऐसा मामला सामने आया है, जहां एक 18 वर्षीय युवती ने थाना रायपुरिया में आवेंदन देते हुए बताया कि, आरोपी पक्ष पंकज गामड़, सुभाष मुनिया, अंकुश मुनिया, विक्रम मुनिया और राजू निनामा 12 नवम्बर को रात्रि में एक बजे एक वाहन में पुलिस का हॉर्न लगा कर आए और उठा ले जाने की नीयत से झूमा-झटकी कर छेड़छाड़ की। युवती ने बताया कि, उसके पिता नही है और वो उसकी माता के साथ अकेली रहती है ओर बदमाशो के आने के बाद चिल्लाने की आवाज़ सुनकर आसपास के लोग जाग गए तब जा कर बदमाश वहां से भागे ।

पूर्व में कर चुके हैं बलात्कार, पहले भी की जा चुकी हैं रिपोर्ट

युवती ने 14 नवम्बर को थाना रायपुरिया में परिवार के साथ पहुँच कर आवेंदन दिया, जिसमे उसने बताया कि, पूर्व में भी आरोपी उसे उठा कर ले गए थे और उसके साथ कुकर्म किया था, इस सम्बंध में 15 जुन 2021 को थाने में रिपोर्ट भी की थी। युवती का कहना है कि, वो मा के साथ अकेली रहती हैं और विपक्षी गुंडागर्दी कर डराते-धमकाते है और ग्राम पंचों के समझाने पर कोई आगे कार्रवाई नही की थी लेकिन विपक्षी अब इस बात का फायदा उठा कर बार-बार प्रताड़ित कर रहे हैं।

सगाई सम्बंध करने वालो को धमकी, कुप में कूद कर जान देने की कोशिश

महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों को पुलिस आपसी विवाद और सामाजिक व्ययस्था से विवाद निपटाने के चक्कर मे आरोपियों पर कोई कार्रवाई नही करती जिससे आरोपियों के लिए दूसरे पक्ष पर दबाब डालने का काम और आसान हो जाता है। युवती ने आवेंदन में बताया, आरोपी दुबारा 14 नवम्बर को कुछ और साथीयो को लेकर आए और जबरन उठा कर ले जाने का प्रयास किया। विपक्षियों की धमकी से परेशान होकर कुप में कूद कर जान देने की कोशिश की थी, लेकिन गांव के तड़वी, पटेल और गाँव वालों ने मिलकर बचाया। विपक्षयो के बार-बार इस प्रकार के हमले के कारण युवती ओर उसकी माँ दहशत में है। युवती की माँ का कहना है कि आरोपी, बेटी की सगाई सम्बद्ध तोड़ने के लिए लगातार दबाव बना रहे हैं। युवती ने थाने में आवेंदन देकर आरोपियों पर कानूनी कार्रवाई कर सुरक्षा की मांग की है ।

क्या पुलिस को बड़ी घटना का इंतजार...?

पुलिस इसे अभी तक आपसी विवाद मान कर सुलह-समझौते से निपटने वाला मामला मान रही है, लेकिन युवती के आरोप यदि सही हे तो मामला बेहत गंभीर है, जिसमे 18 वर्षीय युवती के साथ बलात्कार की वारदात हो चुकी हैं। प्रताड़ित युवती आत्महत्या का प्रयास भी कर चुकी है। अगर युवती और उसके परिवार के आरोप सही है तो पुलिस भविष्य मे किसी बड़ी धटना का इंतज़ार कर रही हैं, जिसके बाद पुलिस विभाग स्वयं कोई जबाब देने की स्थिति में नही रहेगा। पुलिस को युवती के बयान दर्ज कर, आरोपियों पर कार्रवाई कर, युवती के परिवार को सुरक्षा देनी चाहिए, जिससे किसी बड़ी अनहोनी से बचा जा सके।

जनजाति विभाग की पश्चिम क्षेत्र से झाबुआ बना चेंम्पियन

चयनित टीम ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया

माही की गूंज, झाबुआ।

जनजाति कार्य विभाग अपने स्कूली छात्र-छात्राओ की खेल प्रतिभाओ को खोजने, सँवारने और निखारने हेतु प्रतिवर्ष विभिन्न खेल प्रतियोगिता का आयोजन करती हैं, परंतु विगत वर्ष कोरोना काल मे खेल गतिविधियां प्रभावित हुई थी। कोरोना काल के बाद जिन्दगी अब पुनः पटरी पर लौट रही हैं पहले की तरह ही उत्सव और खेल चालू हो चुके हैं। जनजाति कार्य विभाग मध्यप्रदेश ने विभाग के अंतर्गत आने वाले 28 जिलों की विभिन्न प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है, उसमे टेनिस बाल क्रिकेट प्रतियोगिता भी सम्मिलित है। विभागीय राज्य स्तरीय प्रतियोगिता सिवनी मे बुधवार से आयोजित हुई जिसमे पूर्वी क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, दक्षिण क्षेत्र और पश्चिम क्षेत्र की टीम ने हिस्सा लिया।

उस राज्य स्तरीय प्रतियोगिता मे पश्चिम क्षेत्र की टीम जिसमे धार, खरगोंन ,रतलाम, बड़वानी , आलिराजपुर और झाबुआ जिला के चयनित खिलाडियों से चुनी टीम सम्मिलित हुई। इन जिलों के छात्र-छात्राओ से टीम चयन हेतु प्रतियोगिता का आयोजन पेटलावद मे सहायक आयुक्त प्रशांत आर्य के निर्देशन व उत्कृष्ट विद्यालय प्राचार्य देवदत्त मिश्रा के मार्गदर्शन व जिला खेल अधिकारी कुलदीप धबाई की उपस्थिति के साथ खेल शिक्षक युगेन्द्र पुरोहित के नेतृत्व में संपन्न हुई। दो दिवसीय अंडर 19 टेनिस बाल क्रिकेट प्रतियोगिता में झाबुआ जिले की टीम ने बाजी मारी व गत वर्ष के अपने खिताब को सुरक्षित रखा। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ खेलने वाले खिलाडियों का चयन किया गया, चयनित खिलाडियों की ये टीम अब पश्चिम क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करेंगी।

खिलाडियों के चयन पर सहायक आयुक्त प्रशांत आर्य, जिला खेल अधिकारी कुलदीप धबाई, खण्ड शिक्षा अधिकारी संजय हुक्कु, प्राचार्य देवदत्त मिश्रा ,खेल प्रशिक्षक योगेन्द्रदत्त पुरोहित , कुलदीप झाला, अमजद खॉन, नरेश पुरोहित, जगत शर्मा, योगेश गुप्ता, सम्भव गामड, विजय जोशी, देवेन्द्र चौहान ढेकलबडी, मनोज पाठक, दिपक देवडा, भरत चौधरी ने खुशी जाहिर की व आगामी प्रतियोगिता के लिये शुभ कामनाएँ प्रेषित की ।

ड्रग इंस्पेक्टर अहिरवाल ने किया मेडिकल स्टोर्स का औचक निरीक्षण

माही की गूंज, सारंगी।

जिला कलेक्टर महोदय सोमेश मिश्रा के निर्देशानुसार ड्रग स्पेक्टर कमल अहिरवार ने सारंगी के सभी मेडिकल स्टोर का औचक निरीक्षण किया एवं सभी मेडिकल स्टोर संचालकों को कोविड वैक्सीन लगवा लिया है संदेश के पोस्टर को उचित स्थान पर प्रदर्शित करने के लिए निर्देश दिए। अहिरवार ने श्री पद्मावती मेडिकल स्टार्स पर दवाइयों एवं उनके बिलों की जांच की एवं सैंपल एकत्र किए, साथ ही सोडियम हाइपोक्लोराइट सॉल्यूशन बेच नंबर एस एल आई पी 5 की गुणवत्ता की शिकायत मिलने पर जांच की एवं उक्त बेच की दवा को तत्काल विक्रय बंद कर प्रशासन को अवगत कराने का निर्देश दिया। सभी मेडिकल स्टोर्स पर निरीक्षण कर नशे के रूप में दुरुपयोग होने वाली औषधियों कोरेक्स फैंसी डील नाइट्रो वेट कंपोज इंजेक्शन आदि का फर्म में स्टॉक चेक किया ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन का स्टॉक देखा गया। अहिरवार ने बताया कि, निमेसुलिडे टेबलेट, कोलगेट टूथ क्रीम, आर लोक डी ,टेबलेट, कें नमुने जांच एवम परीक्षण हेतु लिए गए, जिन्हे शासकीय लैबोरेट्री भेजा जाएगा, रिपोर्ट आने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की जयंती मनाई

माही की गूंज, थांदला।

स्थानीय कांग्रेस कार्यालय पर थांदला विधानसभा क्षेत्र के कांग्रेस कार्यकर्ताओं, पदाधिकारीयो ने क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की जयंती मनाई।

क्षेत्रीय विधायक वीरसिंग भूरिया, जनपद पंचायत अध्यक्ष गेंदाल डामर सहित मौजूद लोगों ने बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर विधायक ने क्रांतिकारी बिरसा मुंडा के बारे में बताया कि, देश मे विशेष योगदान रहा बिरसा मुंडा को उनके जीवन संघर्ष के लिए भगवान का दर्जा प्राप्त है.। मुंडा विद्रोह के नेतृत्वकर्ता बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को हुआ था, उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफएक मजबूत विरोध के रूप में याद किया जाता है। हमारे समाज के लोग क्रातिकारी बिरसा मुंडा को बरसो से पूजते आए है। उन्होंने भाजपा को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि, भाजपा पंचायत चुनाव नजदीक आते देख आदिवासी भाइयो को जनजाति सम्मेलन के नाम पर भ्रमित करना चाहती है। भाजपा सत्ता में रहने के लिए किसी भी हद तक जाकर दूषित राजनीति करती रही है।

जनपद अध्यक्ष ने कहा कि, पूरा देश क्रातिकारी बिरसा मुंडा की जयंती हर्षोल्लास से मना रहा है। क्रांतिकारी बिरसा मुंडा जिन्होंने अपने जीवन के 25 वर्ष भी पूरे नहीं किए और इस देश की अखंडता, इसकी गौरवशाली संस्कृति, जनजातीय परंपरा, रीति-रिवाजों के संरक्षण के लिए स्वयं के सर्वस्व जीवन को राष्ट्र के नाम कर दिया।. आयोजन में कॉंग्रेस के युवा नेता राजेश डामर, रूसमाल मेडा, हरीश पचाल सहित कई सरपंच,पार्टी के पदाधिकारीगण, कार्यकर्ता आदि मौजूद थे।

जनजाति गौरव दिवस हम सभी के लिए आत्मसम्मान का दिन

जनजाति गौरव दिवस एंव क्रातिकारी बिरसा मुंडा जयंती को जनजाति विकास मंच थांदला द्वारा जनजाति नृत्य, ढोल की थाप व बैंड बाजो के साथ धूम-धाम से मनायी गई। इस अवसर पर खंड टोली के साथ गांव के तड़वी, संत, कोटवाल, वरिष्ठ, माता-बहनें व युवा वर्ग के साथ थांदल मे मुख्य मार्गो से होते हुए मठ वाले कुएं पर सभा की गई। सभा को बहादुर , मनसुक कटारा, खीमा आर्य व जनजाति विकास मंच के जिला सदस्य संजय भाबर द्वारा समाज की संस्कृति, परंपराओं सहित संवैधानिक अधिकार द्वारा समाज का कल्याण, पैसा कानून सभी के लिए वरदान होगा, साथ ही अन्य संरक्षण द्वारा अस्मिता एवम अस्तित्व को बचा कर जनजाति पीढ़ी को विकास की मुख्य धारा में जोड़ते हुए संरक्षित कर सकते है आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया।

साथ ही वरिष्ठ पदाधिकारी कार्यकर्ता गण गेंदलाल भाबर, प्रकाश गरवाल, बसु मैड़ा, मोहन सिंगाड , दुर्गेश मुनिया, मांगू डामोर, संभू बारिया, प्रकाश भुरिया, कमल मैडा, मनसुख कटारा, हमजी चरपोटा, मलसिंह चरपोटा, मनीष मैडा, बबलू डामोर, लालाराम, कैलाश, सुरसिंह, दिनेश, सूरज आइडिया, रूपसिंह खराड़ी, श्रीराम डामोर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन खंड संयोजक यशवंत बामनिया ने तो, आभार पालक शांतु बारिया ने माना।

माधवीक जोशी ने राज्य स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में सिल्वर मेडल जीतकर गांव का नाम किया रोशन

माही की गूंज, सारंगी। संजय उपाध्याय

देवास जिले में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में माधवीक (पप्पू) जोशी ने सिल्वर मेडल जीता, मेडल जीतकर अपने गांव सारंगी पहुंचने पर गांव के नागरिक एवं परिवार वालों ने स्वागत किया। प्रतिनिधि को जानकारी देते हुए माधवीक जोशी ने बताया, देवास कराटे चैंपियन में भाग लेने के लिए जिला कराटे एसोसिएशन के सचिव एवं कोच सूर्यप्रताप सिंह के नेतृत्व में गए थे, यहां स्टेट लेवल पर आयोजित कराटे स्पर्धा में भाग लेकर अलग-अलग आयु वर्ग और निर्धारित वेट सीमा में प्रदर्शन किया। जिसमें झाबुआ जिले के प्रतियोगी ने 4 गोल्ड, 6 सिल्वर मेडल हासिल किए जिसमें मुझे सिल्वर मेडल एवं प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया, इसका पूरा श्रेय मेरे गुरुजन, मेरे दादा-दादी, माता-पिता गांव के सभी वरिष्ठ को देता हूं। सिल्वर मेडल जीतने पर गांव के सभी वरिष्ठ, सभी समाज वर्ग, नगर पत्रकार संघ, श्री गणेश सुंदरकांड मंडल, महाकाल ग्रुप ने माधविक जोशी को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

बड़ी बिल्डिंग और दिखावा नहीं व्यवस्था चाहिए साहब...

पेटलावद के सरकारी डाक्टर निजी प्रैक्टिस में मस्त, महिला डाक्टर भी नहीं आती समय पर, जनजनियां परेशान

गंभीर स्थिति में डिलेवरी के लिए मिशन हॉस्पिटल थांदला ले जाने पर मजबूर हुआ परिवार

माही की गूंज, पेटलावद।

सरकार केवल बड़ी बिलि्डंग बना कर आमजन को स्वास्थ्य सेवा देने का दावा कर रही है। जबकि इन बड़ी बिलि्डंग की स्थिति इतनी गंभीर है कि लोगो की जान आफ्त में पड़ रही है। सिविल हॉस्पिटल में जो स्टॉफ होना चाहिए उससे काफी कम स्टॉफ के साथ लोगो को स्वास्थ्य सुविधा मोहिया की जा रही है और जो स्टॉफ विभाग के पास है उस पर भी अधिकारीयो का कोई नियंत्रण नही है, जिससे मरीज परेशान हैं खास कर गर्भवती जननिया को इस उम्मीद से परिवार यहां ले कर आते हैं कि उनकी डिलेवरी सुरक्षित होगी।

समय पर नही मिल रहा इलाज, गंभीर स्थिति में परिवार ले गया निजी हॉस्पिटल, आधे घन्टे में हुई डिलेवरी

अंगूरी पटु भेरूलाल डामर निवासी बरवेट को डिलेवरी के लिए गंभीर स्थिति में 15 नवम्बर की सुबह सिविल हॉस्पिटल लाया गया, जहा महिला के भाई कांतिलाल ने बताया कि, 15 नम्बर को हॉस्पिटल में आने के बाद से बहन को चैकअप करने के लिए कोई डॉक्टर नही आया। वही 6-6 घन्टे में डूंटी बदलने वाली नर्से ही चेकअप के लिए आई, कोई महिला डॉक्टर भी हॉस्पिटल में उपलब्ध नही थी। कई बार डॉक्टर का पूछने के बाद भी कोई जबाब नही मिला और छुट्टी का हवाला देकर अगले दिन का कहा गया। 16 नवम्बर की सुबह से लेकर 11 बजे तक डॉक्टर के लिए परेशान होते रहे और बहन को ब्लेडिंग ओर उल्टियां शुरू हो गई, जिसके बाद उसे गभीर स्थिति में थांदला के मिशन हॉस्पिटल में ले गए, जहा जाने के आधे घंटे बाद ही बहन की नार्मल डिलेवरी हो गई। अगर समय पर बहन को इलाज नही मिलता तो उसकी ओर बच्चे की जान को खतरा हो सकता था।

चार बार मंगवाया डिलेवरी का सामान, कहा गया कोई जानकारी नही

महिला के परिजनों ने हॉस्पिटल में कार्य कर रही स्टॉफ नर्सो पर गंभीर आरोप लगाया है। महिला के भाई ने बताया कि, जैसे-जैसे नर्सो की डूंटी बदलती रही हर बार आई नर्स ने डिलेवरी का सामान निजी मेडिलक से मंगवाया, उसका उन्होंने ने क्या किया इसकी भी कोई जानकारी नही है। 15 नवम्बर को कुल चार बार नर्सो की डूंटी बदली ओर चारो बार सामान मंगवाया था। यहां बड़ा सवाल ये उठता है कि, सिविल हॉस्पिटल होने के बाद भी डिलेवरी के लिए सामान निजी मेडिकल से मंगवाया गया है। इस संबंध में बीएमओ चोपड़ा का कहना है कि, इस प्रकार की कोई जानकारी नही है मैं दिखवाता हु, किस प्रकार की सामग्री और दवाई बाज़र से बुलवाई गई है।

निजी प्रैक्टिस में मस्त डॉक्टर, महिला डॉक्टर भी नदारद

कहने को तो सिविल हॉस्पिटल में लगभग 8-10 डॉक्टर है जिसमे तीन महिला चिकित्सक भी है, लेकिन ज्यादातर डॉक्टर अपनी निजी प्रैक्टिस कर अपनी दुकानदारी चलाने में व्यस्त हैं। ये डॉक्टर न तो समय पर हॉस्पिटल आते हैं न ही पूरा समय हॉस्पिटल में रहते हैं, कभी हाफ्डे, तो कभी परिवार के साथ, तो कभी अन्य कार्य का बहाना बताकर निजी क्लिनिक पर चले जाते हैं जिनको रोकने वाला कोई नही है। कहने को तीन महिला डॉक्टर है जिसमे से एक पूर्व बीएमओ उर्मिला चोयल जो सरकारी हॉस्पिटल पर कम और खुद के निजी हॉस्पिटल पर अधिक उपलब्ध रहती है। एक महिला डॉक्टर के रूप में पेटलावद अनुविभागीय अधिकारी की पत्नी है जिन पर स्वास्थ्य विभाग का नियंत्रण नही है, न ही कोई रोक-टोक। एक अन्य महिला डॉक्टर भकोरिया जो पहले से ही हॉस्पिटल से गायब है, कुछ दिन आने के बाद लम्बे समय से ड्यूटी पर नही आ रही है जबकि उनका कोई स्थान्तरण नही हुआ है इनके पिता स्वास्थ्य विभाग में ही बड़े अधिकारी है जिसका फायदा हॉस्पिटल में पदस्थ होने के बाद से उठा रही है। वही एक महिला डॉक्टर ने अपना स्थान्तरण करवा लिया। ऐसे ही कुछ हालत पुरूष डॉक्टरों की भी है जो अपनी निजी प्रैक्टिस को अधिक महत्त्व देते हैं और अपने क्लिनिक या घर पर इलाज कर रहे हैं।

डॉक्टर नही होने के कारण गभीर स्थिति में परिजन निजी वाहन से महिला को निजी हॉस्पिटल में ले जाते हुए।

जिला स्वास्थ्य अधिकारी जयपाल ठाकुर ने डॉक्टरों के समय पर उपलब्ध नही होने के मामले में बीएमओ से जानकारी लेने के बाद कार्रवाई की बात कही है।

संपादकीय

जानलेवा साबित होती सरकारों की लापरवाही

देश की राजधानी में प्रदूषण की भयावह स्थिति पर सुप्रीम कोर्ट की सख्ती के बाद मंगलवार को केंद्र व चार राज्यों के मुख्य सचिवों की बैठक में दिल्ली सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का अनुसरण राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में करने की बात कही गई। एयर मॉनिटरिंग कमीशन दिल्ली सरकार के पर्यावरण मंत्री तथा उत्तर प्रदेश, हरियाणा व पंजाब के मुख्य सचिवों की बैठक में एनसीआर क्षेत्र में भी स्कूल व अन्य शिक्षण संस्थाएं कुछ समय के लिए बंद करने, वर्क फ्रॉम होम, निर्माण कार्यों पर रोक लगाने की बात कही गई। दिल्ली सरकार का कहना था कि, सुप्रीम कोर्ट यदि लॉकडाउन लगाने की जरूरत महसूस करता है तो उसका पालन किया जाएगा। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से प्रदूषण रोकने की कार्य योजना सोमवार को हुई सुनवाई के दौरान सौंपने को कहा था।

यह विडंबना है कि, हर वर्ष ठंड की शुरुआत पर इन्हीं महीनों में दिवाली के बाद वायु प्रदूषण की विभीषिका सामने आती है, फिर दिल्ली व केंद्र सरकार आग लगने पर कुआं खोदने के उपक्रम में हाथ-पैर मारती नजर आती हैं। लेकिन समस्या के निराकरण के लिए दीर्घकालीन उपाय होते नजर नहीं आते। ऐसा लगता है कि, सरकारें सुप्रीम कोर्ट की फटकार के बाद ही जागती हैं। विडंबना देखिए कि, दिल्ली की जनता भयावह प्रदूषण संकट से जूझ रही है और दिल्ली सरकार और केंद्र की तरफ से राजनीतिक बयानबाजी थमती नजर नहीं आ रही। खासकर किसानों द्वारा जलाई जाने वाली पराली से होने वाले प्रदूषण के आंकड़े को लेकर। वहीं भाजपा का आरोप है कि, जनता को प्रदूषण से स्थाई राहत देने के बजाए आप सरकार विज्ञापनबाजी में लगी हुई है। सुप्रीम कोर्ट की सजगता से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में विगत में भी सार्थक पहल हुई थी और फिलहाल भी कोर्ट की सख्त टिप्पणियों के बाद केंद्र व दिल्ली सरकारें हरकत में नजर आई हैं।

बहरहाल, कोर्ट की सख्ती के बाद दिल्ली सरकार द्वारा उठाए गए फौरी कदमों से कुछ राहत की उम्मीद तो की जा रही है। निःसंदेह लोगों की सक्रियता कम होने तथा घरों में रहने से प्रदूषण कम होगा और लोग घरों में सुरक्षित रहेंगे। कोर्ट का कुछ दिन का लॉकडाउन का सुझाव भी इसी मकसद से था। ऐसे वक्त में जब वायु गुणवत्ता का सूचकांक खतरनाक स्तर पार कर गया है तो ऐसे कदम अपरिहार्य हो जाते हैं। हमारी सरकारें इस समस्या के स्थायी समाधान के प्रति गंभीर नहीं नजर आतीं। उनमें दृढ़ इच्छाशक्ति का अभाव है। इस समस्या को रोकने के लिए पर्याप्त कानून हैं लेकिन उनका सख्ती से अनुपालन ही नहीं होता। यह विचारणीय है कि, एक खास मौसम में पराली जलाना एक कारक हो सकता है लेकिन जो स्थायी कारक प्रदूषण बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं, उनसे निपटने के लिए सरकारों ने कौन-सी दीर्घकालीन नीति बनाई है...? क्या उन डीजल वाहनों को हटाने की कार्रवाई पूरी हो चुकी है जो निर्धारित अवधि पूरी कर चुके हैं...? पटाखों की बिक्री पर प्रतिबंध के बावजूद वे कैसे बिके और छोड़े गए...? दरअसल, असली समस्या तो कानूनों को लागू करने की है। इनके क्रियान्वयन में जो सख्ती होनी चाहिए, वो नजर नहीं आती। जरूरत इस बात की भी है कि, दिल्ली से लगते शहरों में सरकारी निकायों से सामंजस्य बनाकर समस्या पर काबू पाया जाए। इसके साथ ही नागरिकों को भी जवाबदेह बनाने की जरूरत है। यह जानते हुए कि, हर वर्ष इस मौसम में दिल्ली का दम घुटता है, यह भी सोचने की जरूरत है कि 'ऑड-ईवन' और 'रेड लाइट ऑन, गाड़ी ऑफ' जैसे फौरी उपाय कहां तक प्रदूषण रोकने में कारगर साबित हो सकते हैं, जिसकी अवधि दिल्ली सरकार ने मंगलवार को पंद्रह दिन के लिए बढ़ाई है। साथ ही दिल्ली ही नहीं, पूरे देश में वायु प्रदूषण की स्थिति पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए क्योंकि पिछले हफ्ते केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सर्वे में देश के सबसे ज्यादा प्रदूषित पंद्रह शहरों में दस उत्तर प्रदेश के हैं। जवाबदेही की सोच पूरे देश में बननी चाहिए।

कांग्रेस से विपक्षी दलों का भयभीत होना

तनवीर जाफरी

2014 के लोकसभा चुनाव से पूर्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कांग्रेस पार्टी पर ज़ोरदार प्रहार करना शुरू कर दिया था। नरेंद्र मोदी सहित भाजपा के सभी सहयोगी संगठन जनता से देश को 'कांग्रेस मुक्त' कराने का आह्वान करने लगे थे। हालाँकि 'विपक्षहीन लोकतंत्र' की मनोकामना ज़ाहिर करने वाला इस तरह का आह्वान पूर्णतयः अलोकतान्त्रिक था। इसी के साथ यह भी बताया जा रहा था कि, कांग्रेस ने अपने 6-7 दशक के शासनकाल में देश को सिवाए बर्बादी के और कुछ नहीं दिया। जिस पंडित जवाहरलाल नेहरू की उदारवादी व दूरदर्शी नीतियों की पूरी दुनिया क़ायल रही है वही नेहरू इन स्वयंभू राष्ट्रवादियों को भारत के लिए सबसे घातक नज़र आते हैं। कभी राहुल गाँधी को पप्पू बताकर तो कभी सोनिया गाँधी को विदेशी मूल की महिला बताकर कांग्रेस के सबसे प्रमुख परिवार पर हमलावर होने की कोशिश की जाती रही है। हद तो यह है कि, कांग्रेस की फ़ज़ीहत करने का बीड़ा उठाने वाली इसी विचारधारा से संबंधित 'अफवाहबाज़ों के गिरोह ' ने फिरोज़ गांधी और पंडित नेहरू को मुसलमान साबित करने में भी अपनी तरफ से कोई कसर बाकी नहीं रखी। 6 दिसंबर 1992 तथा गुजरात दंगों के यही जिम्मेदार कांग्रेस को घेरने के लिए हमेशा 1975 का आपातकाल और 1984 के सिख विरोधी दंगे याद दिलाते रहते हैं।

परन्तु पिछले दिनों जिस प्रकार कांग्रेस की लोकप्रियता में उछाल आया और कांग्रेस के सदस्यों की संख्या में बढ़ोत्तरी होनी शुरू हुई उसे देखकर केवल भाजपा ही नहीं बल्कि अधिकांश क्षेत्रीय दल भी चिंतित नज़र आने लगे हैं। बात दरअसल यह है कि, कांग्रेस हो या भाजपा इन दोनों ही राष्ट्रीय राजनैतिक दलों से सभी क्षेत्रीय दल सचेत रहने की कोशिश करते हैं। इन्हें इस बात का भय रहता है कि, राष्ट्रीय दल से गठबंधन करने से कहीं उनके अपने दल का अस्तित्व ही संकट में न पड़ जाए। क्योंकि कांग्रेस हो या भाजपा यह दोनों ही राष्ट्रीय राजनैतिक दल यदि किसी क्षेत्रीय पार्टी से विधानसभा चुनाव पूर्व राज्य की सीटों का बंटवारा करते हैं तो वह सीटें भी अधिक मांगते हैं और यह समझते हैं कि किसी क्षेत्रीय दल द्वारा बड़ी पार्टी को अधिक सीटें देने का मतलब अपने दल के अस्तित्व पर संकट मंडराना।

परन्तु वर्तमान राजनैतिक सन्दर्भ में जबकि अधिकांश विपक्षी दल भाजपा की नीतियों तथा उसके गुप्त व अघोषित एजेंडे से त्रस्त व प्रभावित होकर ग़ैर भाजपा गठबंधन तो ज़रूर बनाना चाहते हैं परन्तु साथ साथ वे कांग्रेस से भी दूरी बनाए रखना चाहते हैं। इसके पीछे भी इन क्षेत्रीय दलों की वही शंका काम करती है कि, कहीं उनके कार्यकर्त्ता व वोट कांग्रेस की ओर न खिसक जायें। ऐसे में सवाल यह है कि, क्या कांग्रेस के बिना भाजपा के विरुद्ध कोई विपक्षी मोर्चा बना पाना और मज़बूती से राष्ट्रीय स्तर पर उसका भाजपा से मुक़ाबला कर पाना संभव है? अब यहाँ वैचारिक प्रतिबद्धताओं का ज़िक्र करना भी ज़रूरी है। जो भी विपक्षी पार्टियां आज कांग्रेस रहित विपक्षी गठबंधन की बात कर रही हैं उनमें कोई भी ऐसा दल नहीं जिसने कभी केंद्र में या कभी किसी राज्य में भाजपा के साथ मिलकर सरकार न बनाई हो। इसका दूसरा अर्थ यह है कि, यह सभी तथाकथित धर्मनिरपेक्ष क्षेत्रीय दल भाजपा को मज़बूती देनेऔर इसे वर्तमान स्थिति तक लाने में भी सहायक रहे हैं। दूसरी ओर कांग्रेस देश की अकेली ऐसी पार्टी है जिसने कभी भी सरकार बनाने के लिए भाजपा के साथ समझौता नहीं किया। और कांग्रेस को जो नुक़्सान उठाना पड़ा है और आज भी उठाना पड़ रहा उसका कारण पार्टी का गाँधी-नेहरू-पटेल-आज़ाद की धर्मनिरपेक्ष विचारधारा का अनुसरण करना ही है।

इसी सन्दर्भ में एक दूसरी हक़ीक़त को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। जिन-जिन राज्यों में क्षत्रीय दलों का वर्चस्व है उन राज्यों में भाजपा को सत्ता में आने के लिए नाकों चने चबाने पड़ते हैं। परन्तु जहाँ जहाँ भाजपा का सीधा मुक़ाबला कांग्रेस से रहता है प्रायः उन राज्यों में भाजपा सत्तासीन हो ही जाती है। वैसे भी मध्य प्रदेश, गोवा व मणिपुर जैसे खेल खेलने में माहिर भाजपा को कांग्रेस में घुसपैठ करने में ज़्यादा परेशानी नहीं होती। क्योंकि इनके हाथों में धर्मनिरपेक्षता की ध्वजा नहीं बल्कि 'धर्म ध्वजा ' होती है। साम-दाम-दण्ड-भेद हर तरीक़े से यह कांग्रेस को कमज़ोर करते रहे हैं। परन्तु ममता बेनर्जी की तृणमूल कांग्रेस और शिवसेना जैसी अनेक पार्टियों पर इनकी चालें नहीं चल पातीं और यदि तृणमूल कांग्रेस के कुछ लोग भाजपा में गए भी तो तृणमूल कांग्रेस में वापस आने पर उन्हें अपने सर मुंडाने पड़े, अपना शुद्धिकरण करना पड़ा और पश्चात्ताप करने के बाद उन्हें पार्टी में वापस लिया गया। वजह साफ़है कि, बंगाल फ़तेह के बाद ममता बेनर्जी स्वयं को विपक्षी दलों की सबसे बड़ी नेता महसूस करने लगी हैं।

ऐसे में सवाल यह है कि देश की, देश के लोकतंत्र व संविधान की तथा अनेकता में एकता की विश्वव्यापी पहचान रखने वाले भारतवर्ष की वर्तमान समय में सबसे बड़ी ज़रुरत क्या है? कांग्रेस के विस्तार से भयभीत होकर धर्मनिरपेक्ष मतों का विभाजन कर भाजपा को ही मज़बूती पहुँचाना? और वह भी अपने दल के अस्तित्व को बचाये रखने की ख़ातिर? अरुण शौरी ने कोलकता में विपक्षी नेताओं की एक सभा में ठीक ही कहा था कि, जब लोकतंत्र बचेगा तभी तो पार्टियां बचेंगी, जब लोकतंत्र ही ख़त्म हो जाएगा तो पार्टियां लेकर क्या करेंगे? कांग्रेस के कमज़ोर होने के बावजूद शरद पवार, प्रशांत किशोर जैसे कई लोग कह चुके हैं कि, विपक्ष में कांग्रेस की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। निश्चित रूप से इसकी यही वजह है कि, कांग्रेस ने हमेशा कट्टरपंथी दक्षिण पंथी विचारों का न केवल विरोध किया है बल्कि कभी भी ऐसे दलों को समझौते योग्य नहीं समझा। यहाँ तक कि इसी रास्ते पर चलते हुए कांग्रेस को अपने कई नेताओं की क़ुर्बानी भी देनी पड़ी है। इसलिए कांग्रेस से विपक्षी दलों के भयभीत होने से ज़्यादा ज़रूरी यह है कि, लोकतंत्र व संविधान की रक्षा के लिये कांग्रेस के नेतृत्व में एक समान वैचारिक प्लेटफ़ोर्म बनाएं। जिन राज्यों में क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व है वहां कांग्रेस क़ुर्बानी दे और क्षेत्रीय दलों को समर्थन दे और जहाँ-जहाँ कांग्रेस सीधे मुक़ाबले में है वहां सभी विपक्षी दलों के नेता एकजुटता का प्रदर्शन करते हुए कांग्रेस के पक्ष में प्रचार करने जाऐं।

वास्तविक मुद्दों से मुंह चुराती राजनीति

लक्ष्मीकांता चावला

हैरानी हुई पंजाब के मुख्यमंत्री चन्नी का यह वक्तव्य सुनकर कि उनके सामने पंजाब के केवल दो ही मुद्दे हैं, बेअदबी के दोषियों को दंड देना और नशों के जाल से पंजाब को मुक्त करना। जो सरकारें शराब को नशा नहीं मानतीं वे कभी भी नशामुक्त पंजाब या देश नहीं बना सकतीं। हाल ही में पंजाब के एक बेटे ने नशे के लिए पचास रुपए न देने पर बाप का कत्ल कर दिया। जहां तंबाकू पर रोक को दंड और जागरूकता अभियान चले, वहीं शराब को प्रोत्साहित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। शराब को भी वैध और अवैध का नाम दे दिया। जिस प्रकार सरकारी भाषा में बड़े-बड़े होटलों में जुआ खेलना अपराध नहीं, पर गरीब का जुआ अपराध है, वैसी ही हालत नशों की भी है। जब कोई पुलिस कर्मचारी या अधिकारी चालीस लाख रुपए की रिश्वत लेकर नशा तस्करों को छोड़ देता है, अनेक केस ऐसे मिले, जिसमें पुलिस कर्मचारी नशा किसी की जेब में या दुकान में डालें या नशे में फंसाने की धमकी देकर मोटी रकम ऐंठना चल रहा हो, वहां नशामुक्त करने का सरकारी स्वप्न कैसे साकार हो सकता है।

पहले सरकार सुनिश्चित करे कि कोई भी राजनेता नशा तस्करों का संरक्षक नहीं, हिस्सेदार नहीं। जब तक ऐसा नहीं हो जाता तब तक नशों पर नकेल डालने का लक्ष्य पूरा हो ही नहीं सकता। निःसंदेह, राजनेताओं के संरक्षण और पुलिस के कुछ बेईमान कर्मचारियों और अधिकारियों के सहयोग के बिना नशा नहीं बिक सकता। निःसंदेह ये दोनों ही मुद्दे महत्वपूर्ण हैं, पर महंगाई, बेकारी, कानून व्यवस्था की बुरी हालत भी पंजाब की जनता की मुख्य कठिनाइयां हैं और पंजाब की जनता को डेंगू का डंक भी बुरी तरह सता रहा है, किंतु सरकार डेंगू पीड़ितों का दर्द नाममात्र भी नहीं समझती। प्रतिदिन रोगियों की संख्या के जो सरकारी आंकड़े दिए जा रहे हैं, वे भी पूरी तरह गलत हैं। क्या सरकार बता सकती है कि डेंगू के हजारों रोगियों के लिए उसने क्या किया। डेंगू के सभी रोगियों के लिए प्लेटलेट देने की व्यवस्था सरकारी अस्पतालों में करवाई गई? सरकारी अस्पतालों में डाक्टर और अन्य मेडिकल स्टाफपूरा किया गया? जब जनता का दर्द ही सरकार को नहीं है तो फिर यह उनके लिए मुद्दा कैसे बन सकता है। राज्य सरकार के मंत्रियों को केवल एक चिंता है कि, ऊंचे पदों पर अपने रिश्तेदारों को कैसे बैठाया जाए। क्या मुख्यमंत्री के समर्थन के बिना ऐसा हो सकता था। वैसे चार दिन की सत्ता की चांदनी कभी भी अमावस्या में बदल सकती है, इसलिए उन्होंने कल करे सो आज कर की नीति पर काम करते हुए अपने संबंधी तो प्रसन्न कर लिए। मुख्यमंत्री अमरेंद्र के त्यागपत्र और उसके बाद नई सरकार का गठन होने के साथ-साथ ही यह सिद्ध हुआ कि, बहुत से विधायक और मंत्री जो अमरेंद्र की वफादारी का ढोल बजाते थे, मन से वे भी उसके विरोधी थे या नए साहब को प्रसन्न करने के लिए बदले-बदले नजर आए। विडंबना देखिए कि चुनाव निकट आते-आते ही राजनीति की मंडी में बोली लगती है और बड़े-बड़े राजनेता पाला बदल लेते हैं। पौने पांच वर्ष जिनके दिल अपनी पार्टी के साथ थे, चुनावों की आहट के साथ ही दिल बदल गए, दल बदल गए। आप पार्टी के दो एमएलए तेजी से कांग्रेस में गए, कुछ कांग्रेसी अकाली दल में और कुछ अकाली कांग्रेस पार्टी के घाट पर पानी पीने के लिए तैयार हो गए। सच्चाई यह है कि, जनता आज राजनीति और राजनेताओं से इसलिए विमुख हो रही है कि उनके समक्ष कोई आदर्श उदाहरण नहीं। सच यह भी है कि जो आदर्शों का पालन करते हैं, उनकी आवश्यकता न सरकारों को है, न राजनेताओं को।

रोटी, कपड़ा और मोबाइल का दौर

आलोक पुराणिक

एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक साल 2021 की तीसरी तिमाही में भारत में हर व्यक्ति औसतन एक दिन में 4.6 घंटे अपने एंड्राइड स्मार्टफोन पर गुजार रहा है। वर्ष 2019 तक औसत एक दिन में एक भारतीय मोबाइल पर 3.3 घंटे बर्बाद करता था, जिसमें पिछले एक वर्ष में 44 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। लूडो में वक्त जा रहा है मोबाइल पर।

तकनीक बदलती है, तरीके नहीं, बंदा पहले वैसे लूडो खेलता था, अब ऐसे लूडो खेलता था। पहले बार-बार वन टू वन मिलकर पूछता था-और बता क्या नया। अब व्हाट्सएप पर हर पांच मिनट में पूछता है और बता क्या नया। नया क्या हो सकता है पांच मिनट में और नया क्या हो सकता है पांच वर्षों में भी। मेरे मोहल्ले में आवारा कुत्तों और चेन स्नैचरों का कहर पच्चीस सालों से है, कहर वैसा का वैसा है। बंदा बदलता है पर बदलता नहीं है।

पोर्न फिल्में बंदा पहले सीडी लाकर देखता था, अब इंटरनेट पर दे-दनादन हैं। इंटरनेट की सबसे सबसे बड़ी खूबी यह है कि दूर से यह तड़ना मुश्किल है कि बंदा स्वामी सदानंद के सत्संग में है या सन्नी लियोनी का सत्संग कर रहा है इंटरनेट पर। सच्चाई यह है कि औसत भारतीय इतना वक्त अपने जीवन के साथ न गुजार रहा है मानसिक तौर पर। जीवन साथी भी लगा है मोबाइल में, मोबाइल ही जीवन साथी हो लिया है। एक बड़ी हाउसिंग सोसायटी के तीन चौकीदार मोबाइल में घुसे मिले, मैंने निवेदन किया-आप लोगों का ध्यान चोरी रोकने पर न है, कोई चोर आयेगा चोरी करके चला जाएगा। एक चौकीदार ने बताया, आप अभी पुराने वक्त में रह रहे हैं, अब चोर चोरी फ्रॉम होम करते हैं, मोबाइल से ही आपकी रकम पार कर देते हैं तो अब चौकीदारी भी मोबाइल में हो रही है और चोरी भी मोबाइल में ही हो रही है। महंगाई की शिकायत करने वालों के मुंह पर तमाचा है इंटरनेट डेटा का भाव इंडिया में। दुनिया में सबसे सस्ता इंटरनेट डेटा भारत में मिलता है। वर्सज 2021 की बात करें, तो भारत में एक जीबी डेटा के लिए टेलीकॉम कंपनियां 10.93 रुपए चार्ज कर रही हैं, जो दुनिया के किसी भी देश के प्रति जीबी डेटा चार्ज से कम है। जबकि 2014 से पहले तक भारतीयों को प्रति जीबी डेटा के लिए औसतन 269 रुपए देना पड़ता था। पिछले 6 वर्षों में भारत में इंटरनेट डेटा की कीमत में करीब 96 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई है। ऐसे में मौजूदा वक्त में एक जीबी डेटा की कीमत एक किग्रा आटा से कम है। डेटा के भाव गिर रहे हों, तो आटे के भाव की चिंता न करनी चाहिए। इंटरनेट पर भजन हैं, प्रवचन हैं, सत्संग है, राग-रंग हैं, सदानंद से लेकर सन्नी लियोनी है, डिस्काउंट पर बिकती कार है, साड़ी पर सेल सलोनी है। लाइफसैट है जी, सस्ता इंटरनेट है जी। क्या कहा इससे बुनियादी समस्याओं का हल नहीं मिलता, छोड़िए वह वायरल वीडियो देखिए।

विकसित समाज बनाने का कोई शार्टकट नहीं

गुरबचन जगत

जनता यानी मतदाता की आवश्यकताएं-आकांक्षाएं और राजनेताओं की तरजीहें, इनके बीच व्याप्त बहुत बड़े फर्क पर इससे पहले भी काफी लिखा जा चुका है। नतीजतन लोगों के बीच असंतोष का स्तर बढ़ा है। जनता को चाहिए तो बस विकास, न्यायवादी और उत्तरदायी प्रशासनिक व्यवस्था और यही देने में राजनीतिक दल सरकार बनाने के बाद ज्यादातर विफल रहे हैं। आखिर हम खुद को ऐसी शोचनीय अवस्था में क्यूं पा रहे हैं, जो एक ओर बीमारी, बेरोजगारी, भुखमरी, सीमा पर चढ़ आए वैरी पड़ोसी से त्रस्त है तो वहीं समाज संप्रदाय, जाति, बोली, क्षेत्रवाद के आधार पर आपस में बंटा है। इन्हीं से मुक्ति को संविधान निर्माताओं ने संविधान के जरिये हमें सशक्त करना चाहा।

लगता है, राजनीतिक दल और नेतृत्व के लिए एकमात्र एजेंडा राष्ट्रीय अथवा राज्यस्तरीय नीतियां बनाने की बजाय निजी उपलब्धि पाना है। राजनेता चीजों को आम आदमी और उसकी जरूरतों के नज़रिए से नहीं देखते। वक्त पड़ने पर, वे उन्हें दोहन करने लायक वोट बैंक की तरह लेते हैं। पांच राज्यों में होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों को ही लें। किसी भी कीमत पर 'वोट जीतने' की खातिर सत्तासीन और सत्ताविहीन दलों के बीच मुफ्त की सुविधाएं-छूट देने की घोषणा करने वाली दौड़ लगी है। कहीं बिजली दरें घटाई जा रही हैं, तो कोई तीर्थस्थलों की मुफ्त रेल यात्रा का वादा कर रहा है, पेट्रोल-डीज़ल की कीमतों में कमी लाई जा रही है, कहीं रोजमर्रा की वस्तुओं के भाव घटाए जा रहे हैं तो कुछ राज्यों ने तो भर्ती नियमों में बदलाव करके 60-70 फीसदी नौकरियां सिर्फ 'सूबा पुत्रों' को देना तय किया। क्या यही है राष्ट्र निर्माण? क्या यही है भारत बनाने का नजरिया? ये दल भारत को किस दृष्टि से देखते हैं?

भाजपा के विचार वाला भारत विशिष्ट है, जहां धर्म मूल मार्गदर्शक सिद्धांत है। कांग्रेस का अपना दृष्टिकोण मटमैला है और इसको साफ तौर से समझाने वाला कोई नहीं है। सूबाई दलों का नज़रिया बदलता रहता है, जो सत्ता में होने या उससे बाहर होने पर निर्भर होता है। कुछ उन नेताओं ने कांग्रेस से अलग होकर अपने क्षेत्रीय दल बना लिए थे। मसलन, टीएमसी, एनसीपी, वाईएसआर। दक्षिण भारत में खेल एकदम अलग किस्म का है और उसकी अपनी तरज़ीहें हैं। यदि धर्म, जाति, क्षेत्रवाद अधिकांश दलों का मूल आधार है तो फिर भारत रूपी विचार कहां है? ममता बनर्जी, नवीन पटनायक, शरद पवार, एमके स्टालिन, केसीआर, नीतीश कुमार और लालू कद्दावर शख्सियतें हैं, लेकिन अपनी पार्टियां निजी पसंद-नापसंद के मुताबिक चलाते हैं। मुख्यधारा के राजनीतिक दल भी लगभग एक व्यक्ति या परिवार पर निर्भर होते जा रहे हैं। सामूहिक नेतृत्व, काबीना की संयुक्त जिम्मेवारी और निर्णय लेने वाली भूमिका अब नहीं रही। हमारे लोकतंत्र का मूल आधार है कि चुने गए सांसद और विधायकों की भूमिका न केवल अपना नेता चुनने में बल्कि काबीना, सरकार और राज्य-निकाय का गठन करने की भी है। एकल-ध्रुवीय राजनीति बनाने की बजाय राजकीय और निर्णय लेने की शक्ति का वितरण करना न केवल लोकतंत्र वरन? एक प्रभावशाली और दक्ष प्रशासन बनाने के लिए भी आवश्यक है। आज के नेता अपने ही दल में दूसरी पंक्ति के नेतृत्व या काबीना में अपना विकल्प बनने की हैसियत रखने वालों को साथ रखना पसंद नहीं करते। नेहरू के पास सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद और उनके जैसे अनेकानेक काबिल नेता थे। अटलजी के पास आडवाणी, यशवंत सिन्हा, अरुण शौरी, जसवंत सिंह, सुषमा स्वराज इत्यादि चमकदार नेतागण थे, जो खुद प्रधानमंत्री बनने की काबिलियत रखते थे। इसी तरह पीवी नरसिम्हा राव के पास मनमोहन सिंह जैसा वित्त मंत्री थे, तो खुद मनमोहन सिंह के पास काबीना में चिदम्बरम एवं प्रणब मुखर्जी, योजना आयोग में मोंटेक आहलूवालिया और रिज़र्व बैंक में रघुराम राजन जैसे मेधावी साथी थे। ये काबीना के सहयोगी महत्वपूर्ण विषयों पर अपने मन की बात खुलकर रखते थे।

इसी तरह सूबों में तमिलनाडु में कामराज, बंगाल में डॉ. बीसी रॉय, महाराष्ट्र में यशवंत चव्हाण, पंजाब में प्रताप सिंह कैरों और दरबारा सिंह, हरियाणा में बंसीलाल और देवीलाल जैसे सशक्त मुख्यमंत्री हुआ करते थे। बहरहाल, मूल बिंदु यह है कि मौजूदा नेता और सत्ता पर काबिज लोग किसी योग्यता को बढ़ावा नहीं देते, बल्कि ऐसा करने से डरते हैं। इसीलिए कोई बड़ी और अच्छी तरह सोच-विचार कर बनाई गई और दीर्घकालीन नीतियों की पहल नदारद है। एक संतुलित काबीना की अनुपस्थिति से घटिया प्रशासन, आर्थिकी का कमजोर प्रदर्शन और न्याय मिलना दूभर होता जा रहा है। हमारी केंद्रीय और सूबाई सरकारें आग लगने पर कुआं खोदने वाली हैं, जो एक आपातकाल से दूसरे के बीच सोई रहती हैं। आखिरकार, क्या कोविड महामारी, मज़दूर पलायन, जीएसटी क्रियान्वयन, नोटबंदी इत्यादि से पैदा हुई तमाम समस्याओं के बाद हमने राज्यों से सलाह करके कोई दीर्घकालीन राष्ट्रीय योजना बनाई है? चाहे यह स्वास्थ्य क्षेत्र हो, शिक्षा या फिर प्राकृतिक आपदा अथवा आंतरिक सुरक्षा पर

खतरे का विषय हो, तो जवाब है, कतई नहीं। हम निपटने के उपाय के लिए अगली आपदा का इंतजार करते हैं। यह कहा जाता है कि हेनरी फोर्ड ने अपनी कार बनाना उस वक्त ठान लिया था जब एक पत्रकार ने तंज कसते हुए था कि आप तरक्की कैसे कर पाएंगे जबकि आप न तो बहुत पढ़े-लिखे हैं, न ही उद्योग-धंधे का खासा अनुभव है। उनका संक्षिप्त उत्तर था 'मैं दुनियाभर से बेहतरीन दिमागों को इकट्ठा करूंगा', और यही उन्होंने किया, बाकी इतिहास है। हमारे मौजूदा सत्तासीन नेताओं में अधिकांश की कोशिश अपने इर्द-गिर्द खुद से कम राजनीतिक कद वाले रखने की होती है, वे लोग, जिनके पास न ज्यादा दिमाग हो, न ही उनमें नेतृत्व को चुनौती देने की कूवत हो। यही वजह है कि लोगों की नज़र केवल शीर्ष नेता पर लगी रहती है, न कि उसके इर्द-गिर्द इकट्ठा दोयम 'बौनों' पर। लेकिन एक व्यक्ति अपने तौर पर चूंकि पूरे देश के लिए न तो लघु, न ही दीर्घकालीन नीति बनाने में सक्षम होता है, इसलिए अच्छा प्रशासन और न्याय नहीं दे पाता।

करोड़ों लोग जो दारुण गरीबी में जी रहे हैं, वे चुनावों के वक्त कहे गए जुमलों से बाहर नहीं आने वाले। हमें उनको शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार देना होगा और यह सुनियोजित नीतियों और कर्तव्यनिष्ठ नेतृत्व से ही संभव है। केवल चुनाव के दौरान दी जाने वाली मुफ्त की चीजें देने से मदद नहीं मिलेगी, न ही वोट के बदले नोट, शराब, खाना देकर। साल भर कहीं न कहीं होने वाले चुनावों में चलने वाले इस चक्र को देखकर किसी को भी लगेगा कि चुनाव जीतना ही दलों का एकमात्र प्रयोजन है, उनके पास नीतियों-प्रशासन के लिए वक्त नहीं है। सत्ता के लिए चुनाव केवल माध्यम है और सत्ता केवल शक्ति पाने के लिए नहीं हैदृजबकि यह वह आस है जो मतदाता अपना जीवनस्तर सुधारने की खातिर उन्हें सौंपता है। चुनावों के दौरान, खोखले नारों से बचना चाहिए। लोकतंत्र के अन्य स्तंभ सुनिश्चित करें कि चुनावी प्रचार में मतदाता को भरमाने हेतु ध्यान भटकाऊ तत्व समूचा राजनीतिक संवाद अगवा न करने पाएं। चर्चा विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा जैसे मूलभूत मसलों पर केंद्रित रहे, इसके लिए मीडिया जिम्मेदार भूमिका निभाए, वहीं न्यायपालिका को सक्रिय होकर आपराधिक न्याय प्रणाली का पहरुआ बनने की जरूरत है और अपराधियों को राजनीति से परे रखें। चुनाव आयोग महज मतदान प्रक्रिया को अंजाम देने वाला तंत्र न बनकर, यह सुनिश्चित करे कि तमाम दलों को -चुनाव के दौरान चुनावी दंगल के अखाड़े में न्यायोचित मौका मिले।

आइए, भारतीय दलों के चुनावी प्रचार की तुलना विश्व के पुराने लोकतंत्रों से करें। यूके में कंज़र्वेटिव और लेबर पार्टी है तो अमेरिका में डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन दल हैं, वे चुनाव पूर्व, विभिन्न विषयों-समस्याओं पर अपनी विचारधारा और नजरिया जनता के सामने एकदम सपष्ट रूप से रखते हैं। अमेरिका में ज्यादातर नागरिकों का इन दोनों में से किसी एक पार्टी की तरफझुकाव साफझलकता है और वे अपनी इस स्थिति को लेकर स्पष्ट होते हैं। पार्टियों का एजेंडा मुख्यतः लोगों की आर्थिक जरूरतें और समग्र विकास पर केंद्रित रहता है। पर्यावरण-बदलाव और प्रदूषण जैसे अन्य मुख्य विषयों का चुनावों पर असर का आकलन भी राजनीतिक दल लगातार करते हैं और स्थिति स्पष्ट करते हैं। हाल ही में राष्ट्रपति बाइडेन और डेमोक्रेट्स ने बुनियादी ढांचे के विकास हेतु अपनी योजना का खाका संसद एवं लोगों के सामने रखा था। महीनों बहस चली और अंततः द्विपक्षीय मतदान के जरिए यह पारित हुआ। इसमें पार्टी लीक से हटकर क्रॉस-वोटिंग भी हुई, जो कि पक्षपाती होकर मतदान करने की बजाय जीवंत लोकतंत्र का द्योतक है। दरअसल, क्रॉस-वोटिंग प्रस्तावित विषय की महत्ता पर हुई है, यह नहीं है कि सांसद टूट गए या पाला बदला। वास्तव में, वहां सामूहिक दलबदल कभी सुना तक नहीं। राजनीति में शुचिता बरतना बहुत जरूरी है। हालांकि, इस किस्म के लोकतंत्र में भी ट्रंप सरीखा कभी-कभार उभरकर आ जाता है, लेकिन उन जैसों और उसकी नीतियों से कैसे निपटना है, यह भी अमेरिकन लोग जानते हैं।

दूसरी ओर हम भारतीय हैं, जो दलों के चुनाव चिन्हों से वफादारी निभाने में ही फंसे हुए हैं। हमारे विभिन्न दलों के चुनावी चिन्ह बेशक अलहदा हों, परंतु वोट पाने को धर्म-जाति और चुनाव पूर्व लोकलुभावन घोषणाएं और मुफ्त का माल बांटने की होड़ उनमें एक जैसी है। हम समझें कि एक विकसित समाज बनने की दिशा में कोई शॉर्टकट नहीं है। मायने रखते हैं तो राष्ट्रीय नीतियां, एजेंडा और समर्पित नेता। एक नई पीढ़ी आ रही है और पुराने विचारों से मुक्त है। राष्ट्र इस युवाशक्ति, इनके जोश का समुचित इस्तेमाल करे और उन्हें फलने-फूलने का माहौल देना होगा। हम उन्हें विदेशों का रुख करते देखना गवारा नहीं कर सकते।

नकली खाद बेचने वाला गिरोह पुलिस गिरफ्त में

मध्य प्रदेश व राजस्थान में खपाया जाता है नकली खाद

माही की गूंज, मंदसौर। साहिल अगवान

राजस्थान के झालावाड़ जिले की पुलिस ने मध्य प्रदेश व राजस्थान में सुपर फास्फेट के नाम पर नकली खाद बेचने वाले गिरोह को पकड़ा है। इसके पांच सदस्य पुलिस की गिरफ्त में हैं। मौके से एक हजार से अधिक खाद के कट्टे सहित अन्य सामग्री भी जब्त की गई है। इस पूरे गिरोह का मास्टरमाइंड पिपलियामंडी क्षेत्र के निवासी सुभाष अग्रवाल हैं। अग्रवाल उदयपुर की बंद पड़ी सुर्वी कलर केम लिमिटेड फर्म के नाम से हवाई जहाज सिंगल सुपर फास्फेट के बेग में नकली खाद तैयार कर बेच रहे थे। बताया जा रहा है कि, राजस्थान पुलिस ने अग्रवाल को भी हिरासत में ले लिया है। इधर मंगलवार को प्रशासन ने अग्रवाल के बही पार्श्वनाथ पेट्रे के पास स्थित खाद के गोदाम को सील कर दिया।

गोदाम मालिक के उपस्थित नहीं होने से अंदर खाद के कट्टों की गिनती नहीं की गई। झालावाड़ जिले के भवानीमंडी उपखंड के देवरिया में पुलिस एवं कृषि विभाग की संयुक्तम टीम ने सोमवार को एक कारखाने पर छापा मारा था। झालावाड़ एसपी मोनिका सेन ने बताया कि देवरिया में बिना लाइसेंस खाद बनाने की सूचना मिली थी जिस पर एएसपी गोपीचंद मीणा व कृषि सहायक निदेशक राजेश विजय के नेतृत्व में दबिश दी गई। मौके से एक हजार 201 कट्टे सिंगल सुपर फास्फेट (एसएसपी) व इसमें उपयोग के लिए 500 टन फ्लाइ एश, कोटा स्टोन की सेलरी सहित नकली खाद के परिवहन में लगे तीन ट्रक, एक जेसीबी जब्त किए गए। वहीं हवाइ जहाज छाप सिंगल सुपर फास्फेट छपे करीब 15 सौ खाली कट्टे भी जब्त हुए है।

फैक्ट्री मालिक सुभाष अग्रवाल निवासी पिपलियामंडी जिला मंदसौर व मैनेजर सुभाष शर्मा द्वारा ठेके पर मजदूरों को लगाकर नकली खाद का निर्माण किया जा रहा था। मौके से पुलिस ने मंदसौर जिले के पिपलियामंडी थाना क्षेत्र के जसवंतसिंह पुत्र रणसिंह राजपूत, गरोठ थाना क्षेत्र के निसार अहमद पुत्र नूर मोहम्मद, गणपत पुत्र बद्रीलाल मेघवाल, जगदीश पुत्र पन्नालाल पाटीदार, मिश्रोली थाना क्षेत्र के आकखेड़ी निवासी ओमप्रकाश पुत्र राधेश्याम गुर्जर को गिरफ्तार किया है।

मध्य प्रदेश व राजस्थान में खपाया जा रहा था नकली खाद

दीपावली से करीब तीन-चार दिन पूर्व ही फैक्ट्री में काम शुरू हुआ था। आरोपित रात में ही खाद का पैकिंग करते थे। आरोपितों ने राजस्थान व मध्य प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में नकली बेचा है। मंगलवार को संजीत के नायब तहसीलदार अर्जुन भदौरिया, पटवारी दल व उपनिरीक्षक कपिल सौराष्ट्रीय मह-नीमच राजमार्ग स्थित कामधेनु वेयर हाउस पहुंचे। भदौरिया ने बताया राजस्थान की झालावाड पुलिस ने नकली खाद का कारखाना पकड़ा है।

कारखाना सुभाष अग्रवाल के नाम से हैं झालावाड़ पुलिस के अनुसार फैक्ट्री तथा भूमि आस्था पत्नी प्रिंस गर्ग, ममता पत्नी सुभाष अग्रवाल व सुभाष पुत्र सूरजमल अग्रवाल निवासी पिपलियामंडी हाल मुकाम मंदसौर के नाम पर है। बही पट्टे के पास कामधेनु वेयर हाउस भी उसका ही है। वेयर हाउस पर नकली खाद होने के संदेह में जांच के लिए आए मगर मौके पर कोई नहीं मिला। गोदामों पर ताले लगे होने पर उपको ही सील कर वेयरहाउस के मुख्य प्रवेश द्वार को सील किया। वेयर हाउस में पड़ी एक बोलेरो, एक ट्रैक्टर ट्राली व ट्रक को भी वेयर हाउस में ही ताला बंद कर दिया है।

फ्लाइ एश व कोटा स्टोन से निकले चूरे से बन रही थी खाद

झालावाड़ के कृषि सहायक निदेशक राजेश विजय ने बताया कि, फैक्ट्री में बड़ी मात्रा में सीमेंट फैक्टरी से निकले वाली फ्लाइ एश व कोटा स्टोन का चूरा बरामद हुआ है। जबकि सिंगल सुपरर फास्फट खाद में राक सल्फेट एवं सल्फ्यूरिक एसिड नहीं पाया गया है। आरोपित कोटा स्टोन का चूरा व फ्लाइ ऐश मिलाकर साधारण मशीन से बिना प्रोसेसिंग के बेग में भरकर पेकिंग कर रहे थे। फैक्टरी सुभाष अग्रवाल नामक व्यक्ति की बताई जा रही है जो करीब एक वर्ष से सालासर फास्केम प्राइवेट लिमिटेड के नाम से लाइसेंस लेने की कोशिश कर रहा था लाइसेंस नहीं मिलने पर आरोपित ने नकली खाद बनाना शुरू कर दिया। फेक्ट्री पर सालासर फ्लाइ एश केमिकल प्राइवेट लिमिटेड का बोर्ड लगा रखा था और अंदर उदयपुर की ब्लेक लिस्टेड सुरवी कलर केमिकल लिमिटेड कंपनी सहित 3-4 कंपनियों के कट्टे में नकली खाद की पेकिंग की जा रही थी।

चंबल योजना में हुई लापरवाही के नतीजे भुगत रहे किसान व आमजन

माही की गूंज, मंदसौर।

चंबल योजना के कार्य में हुई लापरवाही के कारण अब किसानों व आम नागरिकों को परेशान होना पड़ रहा है। धतुरिया से सीतामऊ तक पाइपलाईन बिछाने का कार्य में पूरी तरह से लापरवाही बरती गई, उस समय अधिकारियों ने भी कार्य की गुणवत्ता को नहीं देखा। इसके परिणाम अब सामने आ रहे है।

लदूना से दो किमी दूर मार्ग पर बिछाई गई पाईप लाईन फूटने से किसानों के खेतों में पानी भर रहा है, वही मुख्य मार्ग पर भी पानी भरा है। इसके कारण कई किसान रबी सीजन में बोवनी नहीं कर पा रहे है। इस संबंध में जिला कांग्रेस महामंत्री गोविंदसिंह पंवार ने एसडीएम संदीप शिवा को शिकायत करते हुए बताया कि, पाइपलाइन फूटने के कारण खेतो व मेन रोड़ पर पानी भरा हुआ है, इस दुर्दशा के फोटो भी कांग्रेस नेता पंवार ने एसडीएम को बताए।

श्री पंवार ने बताया कि, रामनारायण माली सहित कई किसानों के खेतों में पानी भरे होने से बोवनी नहीं कर पा रहे है। वहीं मेन रोड़ पर भी पानी भरा होने के कारण वाहन चालकों को आवागमन में परेशानी हो रही है। श्री पंवार ने शिकायत में बताया कि, विगत दो माह से उक्त पाइप लाइन फूटी हुई है। नगर परिषद के जिम्मेदार अधिकारी एवं संबंधित ठेकेदार द्वारा पाइप लाईन की मरम्मत में लापरवाही बरती जा रही है। जिससे नगर में सप्लाई होने वाले पानी का दुरुपयोग हो रहा है। इस संबंध में बरती जा रही लापरवाही जांच का विषय है। आपने अनुविभागीय अधिकारी से मांग की है कि वे जिम्मेदार अधिकारीयो को पाईप लाईन मरम्मत के निर्देश जारी कर समस्या का निराकरण करवाए।

गो रक्षा कमांडो फोर्स जिलाध्यक्ष हुए सम्मानित

माही की गूंज, शाजापुर। गो सेवा सम्मान समारोह धर्म रक्षा संगठन सागर एवं गो रक्षा कमांडो फोर्स मध्यप्रदेश द्वारा सागर में गोपाष्टमी के पर्व पर गो पुत्रों का सम्मान किया गया। गो सेवा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि महामंडलेश्वर श्री अखिलेश्वर नंदगिरी (गौ सेवा आयोग अध्यक्ष भोपाल कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त), कपिल मलैया (संरक्षक धर्म रक्षक संगठन), कुलदीप सिंह राठौर (संरक्षक गो रक्षा कमांडों फोर्स), सूरज सोनी (प्रदेश अध्यक्ष गो रक्षा कमांडों फोर्स), आदि लोगो ने गो माता की प्रतिमा के समुख दिपप्रज्वलित कर व गो माता को माला पहनाकर सम्मान समारोह की शुरुआत की। गो रक्षा कमांडो फोर्स शाजापुर जिलाध्यक्ष संतोष सूर्या परमार को प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। गो रक्षा कमांडो फोर्स शाजापुर जिला अध्यक्ष संतोष सूर्या परमार ने यह सम्मान शाजापुर जिले के गो पुत्रो को समर्पित किया।और धर्म रक्षा संगटन सागर एवं गो रक्षा कमांडों फोर्स मध्यप्रदेश का आभार व्यक्त किया।

फिल्मों की पटकथा लेखिका मनु भंडारी का निधन

माही की गूंज, मंदसौर।

मशहूर लेखिका मन्नू (महेंद्र कुमारी) भंडारी का सोमवार को 90 की उम्र में हरियाणा के गुरुग्राम में निधन हो गया। रजनीगंधा, निर्मला, स्वामी, दर्पण फिल्मों की पटकथा लिखने वाली मन्नू भंडारी का मध्य प्रदेश से नाता रहा है। उनका जन्म 3 अप्रैल 1931 मंदसौर के भानपुरा में हुआ था। जब वे 6 वर्ष की थीं, तब पिता सुखसंपतराय भंडारी के साथ अजमेर चली गई थीं।

उन्हें देश-विदेश में ख्याति 'महाभोज' व 'आपका बंटी' कहानी से मिली थी। मन्नू भंडारी को 2008 में उपाधिन्यास से सम्मानित किया गया। वे 1992 से 1994 तक विक्रम यूनिवर्सिटी उज्जैन की प्रेमचंद सृजन पीठ की डायरेक्टर थीं। उनके पिता सुखसंपतराय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के साथ ही सामाजिक कार्यकर्ता भी थे। उनकी शिक्षा भले ही राजस्थान में हुई, लेकिन बीच-बीच में कुछ काम से भानपुरा आई।

1920 में पहला कांग्रेस कार्यालय उनके निवास में खुला

जानकारी अनुसार जिस मकान में मन्नू भंडारी का जन्म हुआ, वह आज भी अच्छी स्थिति में है। मकान की देखभाल के लिए एक व्यक्ति रखा हुआ है। बताया जाता है कि, कांग्रेस का सबसे पहला कार्यालय 1920 में इनके निवास पर ही खुला था। महात्मा गांधी जब पहली बार इंदौर आए, तब मन्नू भंडारी के पिता सुखसंपत राय भंडारी ही स्वागत समिति के अध्यक्ष थे।

अक्टूबर 2002 में अंतिम बार आई थीं मध्य प्रदेश

मन्नू भंडारी अंतिम बार अक्टूबर 2002 को पति साहित्यकार राजेंद्र यादव के साथ मध्य प्रदेश आई थीं। इस दौरान 4 दिन अपने काकाजी के स्वर्ण जयंती समारोह में शामिल हुई थीं। उनके पिता सुखसंपतराय देश की पहली हिंदी टू इंग्लिश व इंग्लिश टू मराठी डिक्शनरी के लेखक थे। साथ ही, हिंदी पारिभाषिक कोष, ओसवाल जाति, माहेश्वरी जाति के इतिहास के लेखक थे।

श्याम मित्र मंडल के गठन के साथ मनाया जन्मदिन

माही की गूंज, भानपुरा।

खाटू श्याम मित्र मंडल गौ सेवा एवं निर्धन जन सहायता सेवा समिति ने नवीन बस स्टैंड विजय स्तंभ के पास स्थित पुलिस चौकी में बाबा खाटू श्याम के जन्मोत्सव को सैकड़ों दीप प्रज्वलित कर बड़ी धूमधाम, ढोल धमाके एवं आतिशबाजी तथा पूजा अर्चना के साथ मनाया। इस अवसर पर श्री खाटू श्याम मित्र मंडल गौ सेवा एवं निर्धन जनसहायता सेवा समिति के पदाधिकारियों, सदस्यों सहित नगर के गणमान्य जनों ने शामिल होकर पूजन आरती में भाग लिया। साथ ही समिति का गठन भी किया गया जिसके अनुसार संरक्षक के रूप में जय श्री श्याम बाबा, मार्गदर्शक मुकेश किशन राठौर, अध्यक्ष सुनील माली, उपाध्यक्ष गौरव श्रीमाल व ऋषभ बैरागी, सचिव लोकेश राठौर, सह सचिव अमन सोनी व विनायक मंडकरिया, कोषाध्यक्ष अर्पित चंदेरिया, महामंत्री शरद बंबोरिया, संगठन मंत्री नवनीत गौतम व अलंकृत राठौर, मीडिया प्रभारी आशुतोष लक्षकार, कपिल विश्वकर्मा, भरत दगदी, ऋतिक भाना, व्यवस्था प्रमुख राकेश माली, मृणाल राठौर, ललित नरवालिया, पूजा-पाठ प्रभारी रवि जोशी बनाए गए। वही समिति सदस्य में आयुष राठौर, रजत राठौर, मोहित राठौर, हिमांशु राठौर, मनीष राठौर, उमेश राठौर, दीपक धाकड़, रवि पाटीदार को शामिल किया गया।

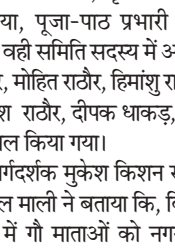

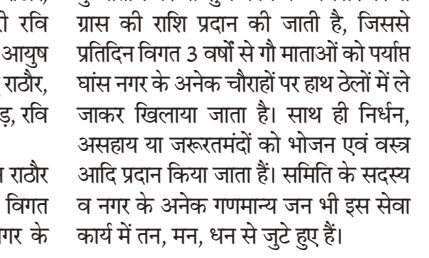

समिति के मार्गदर्शक मुकेश किशन राठौर एवं अध्यक्ष सुनील माली ने बताया कि, विगत 3 वर्षों से नगर में गौ माताओं को नगर के धर्मालुओं द्वारा अपने या परिवारजनों के जन्मोत्सव पर या परिवार के स्वर्गीय जनों की पुण्यतिथि पर या शुभ कार्य के अवसर पर गो ग्रास की राशि प्रदान की जाती है, जिससे प्रतिदिन विगत 3 वर्षों से गौ माताओं को पर्याप्त घांस नगर के अनेक चौराहों पर हाथ ठेलों में ले जाकर खिलाया जाता है। साथ ही निर्धन, असहाय या जरूरतमंदों को भोजन एवं वस्त्र आदि प्रदान किया जाता हैं। समिति के सदस्य व नगर के अनेक गणमान्य जन भी इस सेवा कार्य में तन, मन, धन से जुटे हुए हैं।

बीपीएल भ्रष्टाचारियों से न हुई वसूली न हुई कार्रवाई, चेतावनी देकर छोड़ा

शासन की मदद करने में भांजे का भविष्य लगा दांव पर

माही की गूंज, शाजापुर। अजय राज केवट

अकोदिया नगर परिषद में बीपीएल भ्रष्टाचार खुलासा करने में 3 से 4 वर्ष का कठिनाइयों भरा सफर तय कर कार्रवाई का आदेश हुआ था। परंतु जिले में बैठे जिला परियोजना विकास अभिकरण जिला शाजापुर उच्च अधिकारी, अकोदिया नगर परिषद के उच्च अधिकारी रमेश चंद्र वर्मा एवं वर्तमान नगर परिषद तहसीलदार ने समंदर सिंह चौहान की असंचय वेतन वृद्धि रोक कार्रवाई समाप्त कर दी, वही भविष्य के लिए चेतावनी दी कि, ऐसे भ्रष्टाचार की पुनरावृत्ति न हो। परंतु नगर परिषद अकोदिया कर्मचारी समंदर चौहान का दूसरा सबसे बड़ा भ्रष्टाचार आवास योजना में है, जिसकी शिकायत जिलाधीश को कृष्णकांत मेवाड़ा द्वारा आवेदन देकर की गई थी। परंतु समंदर सिंह चौहान के भ्रष्टाचार की जड़ ऐसी फैली हुई है, कि कोई भी उच्च अधिकारी कार्रवाई हेतु अपनी कलम नहीं चलाते। उक्त भ्रष्टाचार के समाचार माही की गूंज अखबार में 28 अक्टूबर को ÷भ्रष्टाचार उजागर करने वाले को धारा 353 में भेजा जैल÷ व 11 नवम्बर को ÷बीपीएल भ्रष्टाचार के बाद पीएम आवास योजना में भ्रष्टाचार का मामला सामने आया÷ शीर्षक के साथ प्रमुखता से प्रकाशित किया था।

बीपीएल भ्रष्टाचार के बाद पीएम आवास योजना में भ्रष्टाचार का मामला सामने आया

भ्रष्टाचार उजागर करने वाले को धारा 353 में भेजा जेल

समंदर सिंह का असंचय वेतन वृद्धि रोककर कार्रवाई से उच्च अधिकारियों ने अपना पल्ला झाड़ लिया है, जबकि कार्रवाई में बीपीएल इलाज हेतु दी गई राशि ब्याज समेत वसूली की जानी चाहिए थी। कार्रवाई तो सिर्फ अपने कर्मचारी को बचाने के हिसाब से की गई अस्थाई वेतन वृद्धि रोककर, ताकि कुछ समय बाद उनके कर्मचारी को उस वेतन वृद्धि से छुटकारा मिल सके। आजकल तो केवल आमजन पर कार्रवाई होती है जैसे कृष्णकांत मेवाड़ा पर शासकीय कार्य में बाधा डालने की धारा 353 की कार्रवाई हुई। समंदर सिंह चौहान द्वारा अपने पद का दुरुपयोग कर सरकारी कर्मचारी अपने सगे भाई का बीपीएल कार्ड बनाकर इलाज हैतू लाभ दिलवाया, क्या यह शासकीय कार्य में बाधा नहीं है...? बीपीएल भ्रष्टाचार में समंदर सिंह चौहान द्वारा शपथ पत्र पर अपना गुनाह कबूल किया है एवं पहले शपथ पत्र में नोटरी पर अपने गुनाह से मना किया है, क्या यह सही है...? सबसे बड़ी चौंकाने वाली बात यह है कि, मुख्यमंत्री सीएम हेल्पलाइन 181 पर शिकायत दर्ज करने के बाद निराकरण चौका देने वाला आया, जिसमें लेवल वन अधिकारी नगर परिषद अकोदिया द्वारा निराकरण दिया गया कि बीपीएल कार्ड अनुविभागीय अधिकारी शुजालपुर के आदेश से बनाया गया था। बीपीएल के आदेश में यह भी उल्लेख किया गया था कि, यह बीपीएल इलाज होने तक वैध रहेगा। कार्यालय अनुविभागीय अधिकारी शुजालपुर जिला शाजापुर पत्र क्रमांक बीपीएल वर्ष 2016 /49 शुजालपुर, 29 सितम्बर 2016 में पूरी जानकारी स्पष्ट रूप से है। वही पत्र में प्रतिलिपि में उचित जानकारी नहीं दी जाती है। जब सगे संबंधी की बात आती है तो समंदर सिंह चौहान द्वारा कागजों में हेरा-फेरी कर बीपीएल बनवा कर इलाज हेतु बीपीएल बनवा दिया जाता है। एक तरफ इन भ्रष्टाचारियों ने एसडीएम से साक्ष छुपाकर बीपीएल बनवाया जाता है और बीपीएल बनते समय फाइल कहीं रुकती नहीं है, क्योंकि सगे भाई का मामला है। जब मध्य प्रदेश शासन की मदद करने की बात आती है तो अकोदिया नायब तहसीलदार मुकेश सावले टप्पा अकोदिया के 5-6 नोटिस भेज मांगी गई जानकारी जैसे, पूर्व से निर्मित भवन जाटपुरा वार्ड क्रमांक 14, वार्ड क्रमांक 8 नाली निर्माण, वार्ड क्रमांक 8 सीसी रोड, 158 प्रधानमंत्री आवास अपात्र लोगों को दी पात्रता, अन्य शिकायतें के प्रतिवेदन नहीं दिए जा रहे हैं। उच्च अधिकारी अपने कर्मचारियों को बचाते नजर आ रहे हैं। सभी शिकायतें सबूत सहित है। बीपीएल भ्रष्टाचारी समंदर सिंह चौहान को छोटी सी कार्रवाई कर बचाने का पूर्ण प्रयास किया जा रहा है।

सूत्रों के हवाले मिली जानकारी अनुसार शासन की राशि कि न ही कोई वसूली की गई है और न ही शासन के खजाने में वापस राशि को जमा किया गया है और भ्रष्टाचारियों को माफकर दिया जाता है।

शिकायतकर्ता कृष्णकांत मेवाड़ा का कहना है कि, मेरी बीपीएल की सीएम हेल्पलाइन शिकायत गलत निराकरण कर बंद की गई, मैंने तो शासन की मदद में 2 दिन की कारावास भी हंसते-हंसते काटा है, अकोदिया नगर के दबंगों द्वारा जान से मारने की धमकी दी गई है, फिर भी मैंने शासन की मदद करने में अपना कदम पीछे नहीं हटाया। अकोदिया नगर परिषद के उच्च अधिकारी को भी पालन प्रतिवेदन देने हेतु लिखा गया है।

आपको यह सोच कर हैरानी होगी कि, जब कोई गरीब व लाचार व्यक्ति बीपीएल कार्ड बनवाने हेतु फार्म भरता है, तो उचित जानकारी के लिए अकोदिया नगर परिषद के चक्कर लगा-लगाकर उसके पैरों में छाले पड़ जाते हैं, परंतु उसके बीपीएल पालन

कांग्रेस का दीपावली मिलन समारोह हुआ फ्लॉप शो

कांग्रेस नेताओं के भाजपा का दामन थामने के बाद क्षेत्र में गिरा कांग्रेस का ग्राफ

माही की गूंज , पेटलावद।

पेटलावद और सारंगी ब्लॉक में कांग्रेस के द्वारा दीपावली मिलन समारोह के नाम पर सफल आयोजन करने के बाद झकनावदा ब्लॉक में सिंघेश्वर धाम पर आयोजित मिलन समारोह फ्लॉप शो साबित हुआ। पेटलावद विकास खण्ड खासकर झकनावदा क्षेत्र से लगातार कांग्रेस नेताओं के भाजपा का दामन थामने के बाद कांग्रेस विधायक वालसिंह मैडा के भी भाजपा में शामिल होने की चर्चाओं ने जोर पकड़ लिया था। कांग्रेस विधायक वालसिंह मैडा ने दीपावली मिलन समारोह के नाम पर पेटलावद विकास खण्ड के तीनों ब्लॉक में आयोजन कर भाजपा में जाने की खबरों को विराम लगाने का प्रयास कर खुद को कांग्रेस का कट्टर कार्यकर्ता बताते हुए लगातार कांग्रेस नेताओं के कांग्रेस छोड़ने से प्रभावित नही होने का दावा मजबूत करने की कोशिश की लेकिन झकनावदा में आते-आते कांग्रेस की हवा निकल गई।

आठ सौ कार्यकर्ताओं की थी तैयारी, सौ कार्यकर्ता बमुश्किल हुए जमा

रायपुरिया-झकनावदा क्षेत्र कांग्रेस का गढ़ माना जाता है, इस लिहाज से सिंघेश्वर धाम भेरूपाड़ा में दीपावली मिलन समारोह आयोजन किया गया। जिसमें 800 से 1 हजार कार्यकर्ताओ के जमा होने के हिसाब से पूरी तैयारी की गई थी, लेकिन आयोजन में बमुश्किल 100 से 150 लोग ही पहुँचे। गिने-चुने कार्यकर्ताओ के बीच विधायक मैडा ने कांग्रेस को मजबूत करने का दावा किया। कांग्रेस के झकनावदा क्षेत्र के अधिकांश नेता भाजपा के खेमे में चले गए हैं जिसका पूरा असर कॉग्रेस के आयोजन में साफ देखने को मिला। आयोजन के बाद कांग्रेस नेताओं के द्वारा पिछले दो आयोजन की तरह इस आयोजन के फेटो तक सोशल मीडिया पर नही डाले ।

चुनाव में वापसी का मौका कांग्रेस के पास

पंचायत से जिला पंचायत के स्तर के स्थानीय चुनावो में कांग्रेस का खासा प्रभाव रहता है। ऐसे में आने वाले दिनों में स्थानीय चुनाव में कांग्रेस के पास वापसी का बड़ा मौका होगा। कांग्रेस अपने परंपरागत ग्रामीण मतदाताओं को अच्छा नेतृत्व देने में सफल होती है तो, झकनावदा क्षेत्र में उभर सकती हैं। भाजपा अगर कांग्रेस का स्थानीय चुनाव में भारी नुकसान करने में कामयाब होती हैं तो, आने वाले विधानसभा चुनावो में झकनावदा क्षेत्र के कांग्रेसी बेल्ट होने के मिथक को तोड़ कर यहाँ से बढ़त बनाने में कामयाब हो सकती हैं।

बाल मानव श्रृंखला बनाकर किया जागरूक

माही की गूंज, बड़वानी।

चाइल्डलाइन टीम बड़वानी द्वारा चाइल्डलाइन से दोस्ती सप्ताह के तृतीय दिवस मंगलवार को ग्राम बड़गांव की माध्यमिक विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संचालन कर्ता कोमल गाठे द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताते हुए चाइल्डलाइन से दोस्ती सप्ताह के संबंध में बताया गया। कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि विशेष किशोरी पुलिस इकाई से पंकज दसोन्दी द्वारा सभी को बच्चों के संबंध में पुलिस विभाग की भूमिका तथा विशेष किशोर पुलिस इकाई के बारे में बताया गया।

श्रम विभाग से श्रम निरीक्षक लखन भंवर द्वारा बालश्रम के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि, पिकअप वाहनों पर बैठकर काम करने जाने वाले बच्चे अथवा दुकानों पर यदि कोई बच्चा काम करते दिखाई दे तो आप 1098 पर कॉल कर जानकारी दें सकते है। साथ ही टीम सदस्य गणेश वर्मा तथा काजल वाघे द्वारा प्रश्न प्रतियोगिता का आयोजन कर, प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को टीम द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के तत्पश्चात टीम द्वारा सभी बच्चों के माध्यम से 1098 हेल्पलाइन नंबर की जागरूकता एवं प्रचार-प्रसार हेतु बाल मानव श्रृंखला 1098 का निर्माण किया गया। कार्यक्रम अंत में चाइल्डलाइन जिला समन्वयक ललिता गुर्जर ने सभी का आभार माना। इस दौरान स्कूल संस्था से प्रभारी प्रधान पाठक अशफाक शेख, भोपा राठौड़ तथा संजय अलावे उपस्थित रहे।

समाज के बुजुर्गों ने खत्रीज क्रांतिकारी बिरसा को देसी दारू की धार डालकर की कार्यक्रम की शुरुआत

माही की गूंज, मेघनगर। बिरसा मुंडा की जन्म जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस मौके पर जयस आदिवासी परिवार व भील प्रदेश के कार्यकर्ताओं ने रैली के माध्यम से समाज में जनजागृति लाने का काम किया। एक समय था जब क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की जन्म जयंती आदिवासी समाज के कुछ जागरूक लोग ही मनाते थे, उन चंद आदिवासी समाज के जागरूक लोगों के द्वारा की गई जनजागृति से आज पूरा देश क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की जन्म जयंती बड़े हर्षोल्लास के साथ मना रहा है यह आदिवासी समाज के लिए खुशी का पल है, की हमारे आदिवासी क्रांतिकारी योद्धा बिरसा मुंडा की जन्म जयंती सभी वर्ग के लोगों के द्वारा मनाई गई, निश्चित ही इससे आदिवासी समाज में भी एक अच्छा संदेश जा रहा है। मेघनगर में जय आदिवासी युवा शक्ति व भील प्रदेश के सैकड़ों कार्यकर्ता बड़ी संख्या में इमली मैदान पर एकत्रित होकर क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की तस्वीर पर माल्यार्पण कर समाज के क्रांतिकारी बिरसा खत्रीज को आदिवासी संस्कृति व रीति-रिवाज के अनुसार समाज के बड़े बुजुर्गों के द्वारा देसी दारू की धार भी डाली गई। इसी के साथ ढोल मांदल पर समाज के युवा थिरकते हुए नजर आए। उसके बाद समाज के युवाओं व नारी शक्तियों के द्वारा डीजे के साथ रैली के माध्यम से पूरे नगर का भ्रमण किया गया,। बीच-बीच में देवासी समाज के युवाओं के द्वारा बोले जाने वाले नारे अबुआ दिसुम अबुआ राज, जय जोहार का नारा है भारत देश हमारा है, आदिवासी एकता जिंदाबाद, एक तीर एक कमान आदिवासी एक समान जैसे नारे भी सुनाई दे रहे थे। इस मौके पर नारी शक्ति सुमित्रा मेडा, अध्यक्ष माधुसिंह डामोर, अनीश भूरिया, दीप सिंह वसुनिया, अपसिंह वसुनिया, राजू भूरिया, पप्पू मुनिया, राकेश भूरिया, बीटीटीएस के उपाध्यक्ष मनु पारगी, मक्कनसिंह पारगी भील प्रदेश के सक्रिय कार्यकर्ता करण डामोर, दिनेश वसुनिया, पप्पू भाबोर, तूफान भूरिया, खूनसिंह भूरिया, राकेश मुनिया आदि उपस्थित थे ।

सुनसान स्थानों पर राहगीर से लूट करने वाले बदमाश गिरफ्तार

माही की गूंज, खरगोन।

जिले में हो रही लूट तथा चोरी की घटनाओ पर अंकुश लगाने एवं प्रभावी कार्रवाई निरन्तर जारी है। सोमवार रात्री करीब साढ़े 12 फरियादी सुनील काटकूट रोड अग्रवाल फैक्ट्री मैदा घाटी के पास मोड पर रोड किनारे पिकअप खराब हो जाने पर रोड किनारे पिकअप की हेड लाईट चालु करके खडा था। उसी समय तीन व्यक्ति पल्सर मोटर सायकल से आए और फरियादी के सीने पर देशी कट्टा अडाकर थप्पड मारे और बोला कि, तेरे पास जितने पैसे और मोबाइल है निकालकर दे दे नही तो गोली मार दुंगा। तीनों बदमाशो ने फरियादी से 3 हजार रुपए व साथी कुंवरसिंह से 5 हजार रुपए एवं कल्लु से 4 हजार 500 रुपए नगद और ड्रायविंग लायसेंस,आधार कार्ड, एटीएम कार्ड, छीनकर मोटर सायकल से तीनों बदमाश फरार हो गए। फरियादी की रिपोर्ट पर थाना बडवाह पर अपराध क्रमांक 632/21 धारा 394 भादवि का कायम कर विवेचना मे लिया गया।

थाना प्रभारी बड़वाह जगदीश गोयल एवं गठित टीम द्वारा माल-मुल्जिम की पतारसी के लिए पुलिस के सूचना तंत्र व मुखबीरो को सक्रीय कर लूट के आरोपियों की पतारसी हेतु लगाया गया। घटना स्थल पर भौतिक साक्ष्य व परिस्थितिजन्य साक्ष्यों को एकत्रित किया गया। संदिग्धों की गतिविधियों पर नजर रखकर आरोपियों के संबंध में पुख्ता जानकारी हासिल कर तीन आरोपियों को पकडने में सफलता हासिल की, जिनसे आरोपी कृष्णा से घटना में लूटी गई रकम के अलावा एक देशी कट्टा, एक काले रंग का पर्स जिसमे रखे नगदी एक हजार 500 रूपए, फरियादी का ड्रायविंग लायसेस की डुप्लीकेट प्रति, एक बैंक आफइण्डिया का एटीएम कार्ड बरामद किया। वही आरोपी मुलेश से एक काले रंग की लाल पट्टे वाली पल्सर मो.सा. क्रं. एमपी 09 वीडब्लू 8926, एक गेती बीना डांड वाली व नगदी एक हजार रूपए बरामद किए गए है, आरोपियों को अन्य घटनाओं के संबंध में पूछताछ हेतु पुलिस रिमांड प्राप्त करने हेतु न्यायालय पेश किया गया है।

इसी क्रम मे उक्त आरोपियों ने पूछताछ मे बताया कि, हमने चोकी काटकूट क्षेत्र में भी लूट को अंजाम दिया था जिसके संबंध मे चोकी काटकूट थाना बलवाड़ा से जानकारी ली गई तो ज्ञात हुआ कि उसी रात दिनांक 15 नवम्बर को अज्ञात आरोपियों द्वारा लूट की घटना की गई हे। जिस पर से थाना बलवाड़ा मे अप. क्र 340/21 धारा 394 भादवि का कायम किया जाकर विवेचना मे लिया गया हे। थाना बलवाडा के उक्त अपराध मे आरोपिगनों की पुलिस रिमांड लेकर प्रथक से विस्तृत पूछताछ की जाकर माल मश्रुका की बरामदगी की जाएगी।

गिरफ्तार आरोपी

कृष्णा पिता ज्ञानी राठौड जाति बंजारा (20) निवासी ग्राम सोरठी बारुल बलवाडा, मुलेश पिता जेतु रावत जाति भिलाला (20) निवासी ग्राम खमकी बारुल बलवाडा, राजेन्द्र पिता राधेश्याम बलाई (21) निवासी खमकी बारुल बलवाडा।

रबी की सिंचाई के लिए जलसंसाधन विभाग की सारणी जारी

माही की गूंज, खरगोन। जलसंसाधन विभाग ने रबी की सिंचाई और किसानों की सुविधा के लिए देजला देवाड़ा परियोजना से पलैवा और तीन पानी छोड़ने की समय सारणी जारी की है। जलसंसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्री पीके ब्राम्हणे ने बताया कि, पहले चार दिनों 21 से 24 नवम्बर तक विभाग नहरों के परीक्षण के लिए पानी छोड़ेगा। इसके बाद 25 नवम्बर से पलैवा के लिए 2 दिसम्बर तक माइनर नहर क्रमांक 14 से 11 तक और फिर 3 दिसम्बर से 13 दिसम्बर तक नहर क्र.10 से एक में पानी छोड़ा जाएगा। वही 14 से 20 दिसम्बर तक सभी नहरे बन्द रहेगी। इसके बाद इसी तालाब देजला देवाड़ा से 21 दिसम्बर से 28 दिसम्बर तक नहर क्र.14 से 11 तक और 29 दिसम्बर से 7 जनवरी तक नहर क्र.10 से एज तक मे पहला पानी छोड़ा जाएगा। इसी तरह दूसरा पानी 15 जनवरी से 22 जनवरी तक और 23 जनवरी से एक फरवरी तक दूसरा पानी छोड़ा जाएगा। तीसरा और अंतिम पानी 9 फरवरी से 15 फरवरी तक और 16 फरवरी से 25 फरवरी तक छोड़ा जाएगा।

नहर में पानी के बहाव या किसी तरह की समस्या के लिए विभागीय एसडीओ, सिनखेड़ा कोठा और उमरखली के उपयंत्री, बरुड और भगवानपुरा के उपयंत्री और मोहना व देवली के उपयंत्री से सम्पर्क कर सकते है।

तीनों नेत्र विशेषज्ञ को नही मिलेगा वेतन

माही की गूंज, बड़वानी। कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. अनिता सिंगारे तथा सिविल सर्जन डॉ. अरविंद सत्य को निर्देशित किया है कि, वे जिला चिकित्सालय में पदस्थ तीनों नेत्र चिकित्सकों के वेतन को अविलंब रोक दे और उनकों पद से पृथक करने का प्रस्ताव शासन स्तर पर भेजे। ज्ञातव्य है कि, जिला चिकित्सालय में कार्यरत एक नेत्र चिकित्सक लंबे समय से अनुपस्थित है। जबकि कार्यरत दो नेत्र चिकित्सक भी समुचित प्रशिक्षण उपरांत रोगियों की शल्य चिकित्सा नही कर रहे है। जिससे मोतियाबिंद से पीड़ित रोगियों को इन्दौर भेजकर आपरेशन करवाना पड़ रहा है। इससे रोगियों को अनावश्यक रूप से परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन हेतु रिटर्निंग एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त

माही की गूंज, बड़वानी। त्रिस्तरीय पंचायत के आम निर्वाचन की कार्रवाई को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने हेतु कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी शिवराज सिंह वर्मा ने जनपद सदस्य, सरपंच एवं पंच के पद के निर्वाचन के लिए 7 रिटर्निंग एवं 88 सहायक रिटर्निंग अधिकारियों की नियुक्ति की है। निर्वाचन कार्यालय से प्राप्त जानकारी अनुसार त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन जिले में तीन चरणों में सम्पन्न होगा। प्रथम चरण में विकासखण्ड पानसेमल एवं सेंधवा में, द्वितीय चरण में विकासखण्ड निवाली, राजपुर एवं ठीकरी में तथा तृतीय चरण में विकासखण्ड बड़वानी एवं पाटी में निर्वाचन होगा।

लेखिका मन्नू भंडारी की दी श्रद्धांजलि

माही की गूंज, बड़वानी। प्राचार्य डॉ. एनएल गुप्ता के मार्गदर्शन में कार्यरत शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बड़वानी के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा दिवंगत साहित्यकार मन्नू भंडारी को श्रद्धांजलि दी गई। कार्यकर्ता प्रीति गुलवानिया और अंकित काग ने बताया कि, कॅरियर सेल के समक्ष मन्नू जी की तस्वीर पर युवा समूहों में श्रद्धासुमन अर्पित करते रहे। ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट ऑफीसर डॉ. मधुसूदन चैबे ने बताया कि, मन्नू भंडारी ने उच्च कोटि का साहित्य सृजित कर भारतीय वाङ्मय में विषिष्ट योगदान दिया है। उनकी रचनाएं संवेदनषीलता और मार्मिकता से ओतप्रोत हैं। वे पाठकों को आत्मीयता के साथ बांधती हैं और द्रवित कर देती हैं। उनके लिखे शब्द जीवंत हैं, उनसे गुजरते हुए पाठक वहीं डूब जाता है। उनकी कालजयी रचनाओं में आपका बंटी, महाभोज, बिना दीवारों का घर, एक इंच मुस्कान, एक प्लेट सैलाब, स्वामी, कलवा, मैं हार गई, एक कहानी यह भी, अकेली आदि सम्मिलित हैं। उनकी कहानियों पर फिल्में भी बनी हैं। उन्होंने फिल्मों के लिए पटकथाएं भी लिखी है। वे मध्यप्रदेश की रहने वाली थीं। उनका जीवनकाल 3 अप्रैल 1931 से 15 नवम्बर 2021 तक रहा। कार्यकर्ता दीक्षा चैहान ने बताया कि, उनके लेखन पर प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रश्न भी पूछे जाएंगे, अतः युवाओं को पावर पाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से मन्नु के व्यक्तित्व और कृतित्व से निरंतर अवगत करवाया जाता रहेगा।

नो वेक्सीन तो नो रतलामी सेव

शादी की पत्रिका में लिखा, कोरोना के दोनों टिके लगवाए हो तो ही पधारे शादी में

माही की गूंज, रतलाम।

कोरोना के वैक्सीनेशन के प्रति लोगो कि उदासीनता अब प्रशासन के लिए चुनौती बनी हुई है। प्रशासन का सारा अमला सड़को पर रात दिन पसीना बहा रहा है लेकिन दूसरा डोज़ लगवाने में लोग परहेज कर रहे है। ऐसे में रतलाम जिला प्रसाशन अब लोगो को ज्यादा से ज्यादा वेक्सिनेशन कराने के लिए नए-नए तरीके अख्तियार कर रहा है। अधिकारी जहां गांव-गांव में जाकर खुद नुक्कड़ नाटक के जरिये लोगो को वेक्सीन लगवाने के लिए जागरूक कर रहे है। वही रतलाम शहर में दुकानों पर वेक्सीन डोज कम्प्लीट व्यक्ति को ही सामान खरीदने दिया जा रहा है। नमकीन के शहर में नमकीन व्यवसायियों ने तो ÷नो वेक्सीन नो नमकीन÷ को अपनाना भी शुरू कर दिया है।वही शादी के आमंत्रण कार्ड पर वही लिखा जा रहा है कि, बिना टीकाकरण करवाये शादी समारोह में न पधारे।

दरअसल, कोरोना काल के दौरान रतलाम पूरे प्रदेश में टॉप 5 में बरकरार था। सैकड़ो लोग यहां कोरोना कि वजह से असमय ही मौत के मुंह में समा गए, बावजूद इसके लोग कोरोना के दूसरा डोज लगाने में बच रहे है। शहर में अब भी 25 फीसदी लोग दूसरा डोज लगवाने से दूर है । ऐसे में जिले के अधिकारी अब सड़को पर उतरकर दुकान-दुकान जाकर व्यापारियों से वैक्सीनेशन के बारे में जानकारी ले रहे है और जनता भी उन्हें सपोर्ट कर रही है।

लोगों को समझाईश देने के लिए एक महिला नायब तहसीलदार अपनी टीम के साथ नुक्कड़ नाटक कर लोगो को जागरूक कर रही है। इस महिला नायब तहसीलदार का नाम रुपाली जैन है, जो कि रतलाम ग्रामीण क्षेत्र में पदस्थ है। रुपाली इन दिनो उन क्षेत्रों में नुक्कड़ नाटक कर रही है जहां लोग कोरोना वैक्सीन के दूसरे डोज़ से बच रहे है। ठेठ मालवी भाषा में वे, लोगो से सीधे जुड़कर उनकी भ्रांतियां दूर कर रही है। साथ ही उन्हें वैक्सीनेशन के फायदे भी बता रही है। इस महिला तहसीलदार का टारगेट उन ग्रामीण महिलाओं पर है जो अपना दूसरा लगवाने टीकाकरण केंद्रों पर नहीं पहुंच पा रही है। जिसकी वजह से जिला टीकाकरण के मामले में स्थिर बना हुआ है। नमकीन के लिए पूरे देश में महशूर रतलाम के नमकीन प्रेमियों को यह खबर दुखी कर सकती है कि, ÷नो वैक्सीन तो नो नमकीन÷ यानि आपने कोरोना का वैक्सीन नहीं लगाया है तो आपको अब किसी भी दुकान से नमकीन नहीं मिलेगा। खासतौर पर रतलाम की वो सेव, जिसके बिना नमकीन प्रेमियों का भोजन अधूरा है। दरअसल, कोरोना के दूसरे डोज के प्रति लोगो कि उदासीनता के चलते अब नमकीन बेचने वाले संगठन और प्रशासन अब थोड़ी सख्ती दिखा रहा है। प्रशासन को सहयोग करने के लिए शहर की कई दुकानदारो ने यह फैसला भी लिया है कि, अब बिना वैक्सीन के आने वाले लोगो को वे नमकीन और दूसरा सामान नहीं देंगे। हालांकि, इससे दुकानदारों को थोड़ा नुकसान भी हो रहा है।

नमकीन दुकानदारों का कहना है कि, प्रसाशन नमकीन के साथ साथ अन्य दुकानों पर भी सख्ती करे। नमकीन दुकानों के साथ प्रसाशन ने शादी समारोह को लेकर भी सख्ती बरती है। शादी समारोह में ऐसे लोगो को जिनको कोरोना की वेक्सीन नही लगी है उनके लिए शादी समारोह स्थल पर वेकसोनेशन करने के लिए अलग से एक स्टाल लगाया जा रहा है, जहाँ बिना वेक्सीन वाले आने वाले लोगो को पहले वेक्सीन लगाया जा रही है फिर शादी समारोह में शामिल होने दिया जा रहा है। शादी समारोह के आयोजकों द्वारा दिए जाने वाले आमन्त्रण प्रकाशित करने वाले प्रिन्टर्स को भी प्रसाशन ने आदेशित किया कि, वह आमंत्रण पत्र में यह भी प्रकाशित करे की बिना कोरोना टीका लगवाए व्यक्ति शादी समारोह में न आए। इस मुहीम के लिए बाकायदा शहर एसडीएम अभिषेक गेहलोत और तहसीलदार गोपाल सोनी के नेतृत्व में बने दल लगातार शहर में निकल रहे है। ये दल दुकान-दुकान जाकर ओर विभिन मालों में जाकर देख रहे है। दल ने नमकीन व्यापारियो से अपील की है कि, वे बिना वैक्सीन वाले ग्राहकों को नामकीन ना बेंचे, इसके लिए दुकानदार बकायदा अपनी दुकानों पर फ्लेक्स लगाकर ग्राहकों से अपील भी करेंगे की नो वैक्सीन तो नो नमकीन।

पहाड़ी क्षेत्र के ग्राम अट्ठा में अमड़ा आदिवासी समाज का जन सैलाब

धूमधाम से मनाई महानायक धरती आबा क्रांतिसूर्य बिरसा मुंडा जयंती

माही की गूंज, अलीराजपुर।

जिले की सबसे बड़ी तहसील सोण्डवा के पहाड़ी क्षेत्र ग्राम अट्ठा में आदिवासी समाज के द्वारा महानायक धरती आबा क्रांतिसूर्य बिरसा मुंडा की जन्म जयंती बड़े धूमधाम से मनाई गई। जिसमें हजारों की संख्या में आदिवासी समाज जन अपने-अपने क्षेत्रों से परंपरागत वाद्य यंत्रों के साथ नाचते-गाते एवं रैली के रूप में कार्यक्रम स्थल पर पहुँचे। कार्यक्रम की शुरुआत सर्वप्रथम आदिवासी परम्परा, रीति-रिवाज, बाबादेव एवं प्रकृति तथा धरती पूजन के साथ बिरसा मुंडा, टंट्या मामा एवं जिले क्रांतिकारी छितु किराड़ को श्रद्धासुमन अर्पित कर की।

पांडाल को दो भागों में बंटा गया था, महिला व पुरुष अलग-अलग भाग में बैठे थे।मंच के पास ही दोनों ओर अतिथियों एवं मीडिया के लिए कुर्सी लगा कर बैठक व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी। वीआईपी सहित तीन जगह पर पार्किंग व्यवस्था की गई, पुलिस भी सैकड़ों वॉलिंटियर्स के साथ व्यवस्था में लगी रही। वक्ताओं ने आदिवासीयों के हक, अधिकार, जल, जंगल एवं जमीन के साथ ही संस्कृति को बचाने के बात कही।

गुजरात के नरेंद्र भाई राठवा ने कहा कि, आदिवासी को आदिवासी ही पुकारा जाए आदिवासी को कोई और शब्द मंजूर नही है।आदिवासियों को जबरन इसाई, मुस्लिम एवं हिन्दू बनाया जा रहा है, जबकि आदिवासियों की गणना 1971 तक अलग से की जाती रही है। ये सुप्रीम कोर्ट भी मानता हैं, हिन्दू विवाह कानून आदिवासियों पर लागू नही हैं, आदिवासी समाज की व्यवस्था रुढिगत जन्य परम्परा से चलती है। इतनी ही नही आदिवासी समाज में विवाह के भी कई प्रकार है, जो कि दूसरे समाज की तरह समाज व कानूनी मान्यता नही देता है। समाज के जनप्रतिनिधि दूसरों के इशारों पर काम कर रहे हैं, समाज की आरक्षित सीटों से चुन कर जाते हैं, समाज को बांटने का काम कर रहे हैं।

कार्यक्रम को समाज के वरिष्ठ शंकर तड़वाल, भीमसिंह मसानिया, अरविंद कनेश, मालसिंह तोमर, केरमसिंह जमरा, समशेर सिंह पटेल, शंकर बामनिया, गुजरात से कांता बेन, सानिया राठवा, कुमारी दीपेश्वरी, कुमारी जामी एवं क्षेत्रीय विधायक मुकेश पटेल ने भी संबोधित किया। अट्ठा,जोबट,कट्ठीवाड़ा सहित पूरे जिले में ग्राम, कस्बो, विकसखण्ड एवं जिला स्तर बड़े धूमधाम से बिरसा मुंडा की जयंती मनाई गई है।

कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वालो का आदिवासी समाज जिला कोर कमेटी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में नानजी पराडा, नीलेश पराड, राहुल मोरे जितेंद्र मोरी, अखिलेश, पवन, संतोष, नीलेश, परशुराम, बादलिया, सुखराम, पप्पू, राहुल, करणसिंह, अतुल तोमर, गोविंद डावर, किशोर सोलिया, अश्विन तोमर, उमेश तोमर, सुनील चौहान, बबलू जमरा, मुकेश तोमर तथा मीडिया प्रभारी विजय कनेश, रवि लोहारिया सहित क्षेत्रो के पटेल, पुजारा, सरपंच, जनपद सदस्यों के साथ ही ग्राम अट्ठा, कोसरिया, अमला, छोटी गेन्द्रा, बड़ी गेन्द्रा, मुंडला, अचपाई, गेंदा, चिखली सिरखडी, किलोड़ा, अकलघरा के युवाओं का विशेष सहयोग रहा है। कार्यक्रम का संचालन विक्रम सिंह चौहान ने किया एवं आभर नीलेश पराडा ने माना।

देवउठनी ग्यारस पर भगवान शालिग्राम तथा तुलसी माता का विवाह संपन्न

पूजा में उपयोगी गन्ने का भाव आसमान पर रहे

माही की गूंज, आम्बुआ।

लगभग चार माह की योग निद्रा के बाद देवउठनी ग्यारस को भगवान विष्णु जी को उठाया जाने का कार्यक्रम संपन्न हुआ। भगवान को विभिन्न व्यंजनों का भोग लगाया गया, उसके पूर्व सालिग्राम के विग्रह को तुलसी जी के साथ विवाह भी संपन्न कराया गया।

दीपोत्सव के बाद ग्यारस की तिथि को प्रतिवर्ष देवउठनी ग्यारस के रूप में मनाया जाता है। बताते हैं कि, ÷चतुरमास÷ में भगवान श्री हरि योग निद्रा में रहते हैं जिन्हें देवउठनी ग्यारस को उठाया जाता है। श्रीहरि को सजा कर तैयार कर उनका शुभ विवाह माता तुलसी के साथ करावाया जाता है। तुलसी के विवाह हेतु गन्ने का मंडप सजाया जाता है इस बार क्षेत्र में गन्ने का भाव 50 रू नग के हिसाब से मिलने के कारण लोग परेशान रहे तथा मजबूरी में महंगा खरीदना पड़ा। रात्रि में दीपमाला सजा कर तथा आतिशबाजी कर त्यौहार मनाया गया। सभी और देवउठनी ग्यारस की धूम धाम रही।

त्यौहारिया हाट में ग्रामीणों ने जमकर खरीदी पूजन सामग्री

माही की गूंज, आम्बुआ।

ग्रामीण क्षेत्रों में छोटी दिवाली की धूम रही, ग्रामीण इस त्यौहार हेतु हाट बाजारों में खाद्य सामग्री के साथ-साथ बाबा देव को चढ़ाने हेतु विभिन्न प्रकार की सामग्री भी खरीदते हैं। आम्बुआ में साप्ताहिक किंतु त्योहार हाट बाजार में भीड़भाड़ देखने को मिली।

शहरी लोग लक्ष्मी पूजन आदि कर दीपोत्सव मनाते हैं। मगर ग्रामीण इस दीपोत्सव की बजाए छोटी दिवाली अधिक उत्साह से मनाते हैं। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की चौदस की रात आदिवासी समुदाय अपने आराध्य देव की पूजा अर्चना करते हैं, इनका देवस्थान प्रकृति की गोद में हरे भरे वृक्षों के झुरमुटो के बीच होता है। पत्थरों की मूर्तियों के स्थान पर लकड़ी की बनी हुई आकृतिया जिन्हें बाबा देव कहा जाता है रहते हैं, अधिकांश ये स्थल बरगद के पेड़ों के नीचे होते हैं। आम्बुआ में भी आम्बुआ-अलीराजपुर मार्ग पर भिलवट बाबा भी ऐसा ही देव स्थान है। जहां पर वर्ष की मनौतियों, अच्छी फसल, अच्छे स्वास्थ्य आदि की कामना पूर्ण होने पर चौदस की रात पूजा अर्चना की जाती है भिलवट बाबा को विभिन्न सामग्रियों के स्थान देसी (महुआ की) शराब, मुर्गे, बकरे तथा मिट्टी के घोड़े एवं मिट्टी के ढावे भी चढ़ाए जाते हैं। साप्ताहिक हाट बाजार में ग्रामीणों ने इस सामग्रियों की जमकर खरीदारी की। बाजार में अधिक भीड़ भी देखी गई भीड़ में कोरोना गाइडलाइन का पालन नहीं होने से भविष्य में बीमारी का खतरा बना हुआ है।

विधायक पटेल के जन्मदिन पर युवाओं ने बांटे कंबल

माही की गूंज, अलीराजपुर। अलीराजपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक मुकेश पटेल के जन्मदिन पर युवाओं ने नगर के विभिन्न वार्डो मे गरीब और जरूरत मंदो की ठंड से बचने के लिए कंबल वितरित किए। वर्तमान मे ठंड का प्रकोप चल रहा है, ऐसे मे कुछ गरीब वर्ग जो फुटपाठ पर रहकर अपना जीवन गुजर बसर करते है, ऐसे मे उन लोगो को ठंड से जुझना पड़ता है। युवाओं ने विधायक मुकेश पटेल के जन्मदिवस के अवसर पर गरीब वर्गो को ठंड से बचने के लिए सेकड़ो कंबल वितरित किए। इस दौरान गरीब वर्गो ने विधायक पटेल के जीवन दीर्घायु की मंगलमय कामना की। इस अवसर पर युवा मनीष चौहान, पृथ्वीराज तोमर, रोहित बघेल,अमित तोमर, संजय माली आदि मौजूद थे।

जनसुनवाई में अपर कलेक्टर ने 11 आवेदकों को व्यक्तिगत रूप से सुना

माही की गूंज, अलीराजपुर।

जनसुनवाई में अपर कलेक्टर सीएल चनाप ने 11 आवेदकों को व्यक्तिगत रूप से सुना तथा मौके पर ही हो सकने वाली समस्याओं का निराकरण कराया। जबकि मांगो से संबंधित आवेदनों को संबंधित विभागों को भेजकर परीक्षण कराने के निर्देश दिए। जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर श्रीमती लक्ष्मी गामड, डिप्टी कलेक्टर सुश्री जानकी यादव समेत अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थें।

वेतनमान के एरियर का भुगतान कराया जाए

जनसुनवाई में जोबट निवासी श्रीमति माग्रेट नथानिदल ने आवेदन देकर बताया कि, वह एक वर्ष पूर्व एएनएम के पद से सेवानिवृत्त हो चुकी है, लेकिन उन्हे वेतमान को एरियर का लाभ नहीं दिया गया। कई बार विभाग प्रमुख को अवगत भी कराया गया, लेकिन उन्हे अभी वेतनमान के एरियर का भुगतान का लाभ नहीं मिला। वेतनमान के एरियर का भुगतान कराए जाने का अनुरोध किया। इस पर जनसुनवाई कर रहे अपर कलेक्टर श्री चनाप ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को प्रकरण में समुचित जांच कर वेतनमान के एरियर का भुगतान करने के निर्देश दिए।

भूमि का हिस्सा दिलवाया जाए

इस जनसुनवाई में ग्राम बोरी निवासी सरोज पति बाबुलाल राठौड ने आवेदन देकर बताया कि, उनके पति की मृत्यु सन् 2005 मे हो गई थी उनके ससूर के नाम पर कृषि भूमि बोरी में स्थित है। लेकिन उनके जेठ कृषि भूमि में हिस्सा नही दे रहे उनको उनके हिस्से की उक्त भूमि का नामांतरण करवाया जाए। इस पर जनसुनवाई कर रहे अपर कलेक्टर श्री चनाप ने राजस्व अधिकारी को प्रकरण में समुचित जांच कर उचित कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

मंत्री पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग का भ्रमण कार्यक्रम

माही की गूंज, झाबुआ। मंत्री मध्यप्रदेश पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग महेन्द्र सिंह सिसौदिया का 20 नवंबर का झाबुआ में भ्रमण कार्यक्रम जिसमें प्रातः 10 बजे भोपाल से झाबुआ के लिए प्रस्थान सांयः 4 बजे झाबुआ आगमन एवं आरक्षित सांयः 4.15 बजे विभागीय समीक्षा बैठक एवं अधिकारियों से भेंट, सांयः 5.30 बजे पार्टी कार्यकर्ताओं से भेंट, सांयः 7:30 बजे जिला अलीराजपुर के लिए प्रस्थान।

भिलवट पूजा हेतु मुर्गो, बकरों की बढ़ती मांग के साथ बड़े भाव

माही की गूंज, आम्बुआ। दीपोत्सव के बाद आगामी चौदश की रात ग्रामीण छोटी दिवाली मनाते हैं कई स्थानों पर आदिवासी समाज के बाबा देव, भिलवट आदि धार्मिक स्थलों पर पूजा के बाद मुर्गों तथा बकरों की बलि देने की परंपरा है। इस हेतु साप्ताहिक हाट बाजारों में इनकी मांग बढ़ने से भाव भी बढ़ रहे हैं।

कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की अमावस को दीपावली का पूजन आदि का विधान है। इसके एक पखवाड़े के बाद शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तथा चौदस की रात को छोटी दीवाली ग्रामीण क्षेत्रों में मनाई जाती है। इस रात भिलवट देव की पूजा भी की जाती है। पूजा में नारियल, मिठाई के साथ-साथ देसी शराब की धार चढ़ाने के बाद मुर्गो तथा बकरों की बलि दी जाती है। जिससे साप्ताहिक हाट बाजारों में इन दिनों बकरों तथा मुर्गों की मांग अधिक होने से बकरे 5 हजार से लेकर 10-15 हजार तथा मुर्गों का भाव 300 से लेकर 500 तक पहुंच रही है। स्मरण रहे कि, देवता को देसी मुर्गा-मुर्गी ही चढ़ाए जाते हैं इसलिए इसकी मांग अधिक है।

दुकानों की नीलामी, बाहर के व्यापारियों ने लगाई बोली

माही की गूंज, आम्बुआ। ग्राम पंचायत आम्बुआ के समीप स्थित सामुदायिक स्वच्छता परिसर के साथ नवनिर्मित दो दुकानों की नीलामी 14 नवंबर को पंचायत भवन में की गई। बोली लगाने वाले तीन व्यापारियों में से एक आम्बुआ, दो जोबट के रहने वाले हैं। जोबट के व्यवसाई प्रति सप्ताह हाट बाजार में इन्हीं दुकानों के सामने दुकानें लगाते हैं इस कारण उन्हें इन दुकानों की जरुरत भी थी। पंचायत द्वारा पूर्ण पारदर्शिता के साथ समाचार पत्र में विज्ञप्ति प्रकाशित कर तथा सार्वजनिक स्थलों पर विज्ञप्ति चस्पा कर नीलामी का एलान किया गया। पंचायत सचिव गिरधार सिंह चौहान ने बताया कि, प्रथम दुकान 53 हजार रुपए तथा दूसरी दुकान 50 हजार सौ रुपए मे अन्तिम नीलामी में दी गई। दुकानों का किराया प्रतिमाह 15 सौ रुपए प्रति दुकान तय किया गया है तथा संपूर्ण कागजी कार्रवाई के बाद बोली लगाने वालों को उक्त दोनों दुकानें आवंटित की जाएगी। प्रथम दुकान इब्राहिम पिता सजाउद्दीन तथा दूसरी दुकान जाकिर सजाउद्दीन ने ली है।

बिरसा जयंती पर जनजाती विकास मंच और जयस ने किया आयोजन

दोनों संगठनों के आयोजनों के चलते क्षेत्र के ग्रामीणों ने प्रधानमंत्री के कार्यक्रम से दूरी बनाई

माही की गूंज, पेटलावद।

राजनीति का नया अध्याय बन चुके शहीद बिरसा मुंडा की जंयती पर अंचल से लेकर भोपाल तक गूंज रही। जहा एक और भोपाल के जम्बूरी मैदान में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिरसा जयंती को गौरव दिवस के रूप में मनाने के लिए आये थे, वही इस कार्यक्रम के कारण अंचल में होने वाले आयोजन का रंग फीका होता दिख रहा था। अंचल के ग्रामीण काफी कम संख्या में भोपाल गए और स्थानीय स्तर पर बिरसा जंयती धूमधाम से मनाई। एक ओर जनजाति विकास मंच तो दूसरी और जय आदिवासी संगठन (जयस) ने अपने-अपने आयोजन किये। आने वाले स्थानीय चुनावो को देखते हुए दोनों संगठनों ने शक्ति प्रर्दशन किया। पेटलावद, छायन पश्चिम के साथ-साथ अंचल में कई स्थानों पर बिरसा जयंती पर आयोजन हुए।

सम्पूर्ण जनजाति समाज को गौरवान्वित होने का क्षण है, जनजाति गौरव दिवस- गौरसिंह कटारा

स्थानीय शासकीय उत्कृष्ट स्कूल मैदान पेटलावद में जनजाति विकास मंच द्वारा क्रांतिसूर्य क्रांतिकारी बिरसा मुण्डा जयंती के उपलक्ष में जनजाति गौरव दिवस धूमधाम से मनाया गया। पेटलावद खण्ड के कई कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ तड़वी-पटेल आदि उपस्थित हुए। सर्वप्रथम मंचासीन जनजाति समाज के वरिष्ठजन द्वारा भगवान बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण किया गया, तत्पश्चात मंचासीन वक्ताओं द्वारा संबोधन किया गया। सर्वप्रथम खण्ड संयोजक द्वारा संबोधन किया गया जिसमें उन्होंने कहा कि, हमारे समाज का गौरव क्रांतिकारी बिरसा मुण्डा की जयंती को गौरव दिवस के रूप में मना रहे है जो बड़े हर्ष की बात है। सामाजिक कार्यकर्ता सुरसिंह मीणा ने भी संबोधित किया और कहा कि, हमारे जनजाति समाज को आजाद भारत में पहली बार एक गौरवान्वित क्षण मिला है, तो गर्व की अनुभूति हो रही है। कालुसिंह निनामा सरपंच ने अपने उद्बोधन में कहा कि, हमारा समाज वनों में निवास करता था और आज भी करता है। अंग्रेजों का मुकाबला जितनी कठोरता से यदि किया है तो वह जनजाति समाज ने किया है, जो आज गौरव दिवस के रूप मे उन्हें याद करने का अवसर है।

मुख्य वक्ता जिला संगठन मंत्री गौरसिंह कटारा ने अपने उद्बोधन में क्रांतिकारी बिरसा मुण्डा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, क्रांतिकारी बिरसा मुण्डा को रामायण, महाभारत, वेद आदि का भी ज्ञान था। उन्होंने मिशनरी स्कूल में पढाई करने के बावजूद भी सनातन संस्कृति की रक्षा करने के लिए ऊलगुलान जारी रखा और अंग्रेजों द्वारा हो रहा मुण्डा जनजाति के साथ अत्याचार और अन्याय के विरूद्ध लडाई लडी। उस समय के अंग्रेज और मिशनरी एक ही परंपरा और वेशभूषा में हुआ करते थे। अंग्रेज और मिशनरी एक ही तरह की टोपी पहनते थे, दोनों की टोपी एक जैसी होने से बिरसा और सजग हो गए थे और उन्होंने एक नारा दिया था, टोपी-टोपी एक है।

इस तरह से अंग्रेजों का विरोध करने पर अंग्रेज सरकार ने क्रांतिकारी बिरसा को गिरफ्तार कर लिया और जेल में धोखेवश जहर देकर मात्र 24 वर्ष की आयु में उन्हें मार दिया। मंचासीन संबोधन के बाद मंच पर नृत्य मण्डल ने जनजाति नृत्य की प्रस्तुति दी। उसके बाद भव्य शोभा यात्रा पेटलावद नगर के प्रमुख मार्गो से निकाली गई। जगह-जगह स्वागत किया गया तथा पुनः उत्कृष्ट स्कूल मैदान पर आकर शोभा यात्रा का समापन हुआ। इस अवसर पर सुरेन्द्र राणा, कोमल निनामा, सकरिया निनामा, विक्रम गरवाल, कांतिलाल डामर, कैलाश डामर, पप्पू डामर, राजेश मैडा, राहुल परमार, अनोखीलाल सिंगाड़, कालुसिंह लालपुरा, निलेश कटारा, सुखराम दामनिया, मोती खडिया, सुरेश अरड़ आदि पेटलावद क्षेत्र के कार्यकर्ता उपस्थित हुए। संचालन अमृतलाल भाभर ने किया।

जयस के नेतृत्व में छायन पश्चिम में बिरसा की प्रतिमा की स्थापना कार्यक्रम में नारों से गुंजा पंडाल

जब तक सूरज चांद रहेगा बिरसा तेरा नाम रहेगा, बिरसा मुंडा अमर रहे अमर रहे, बिरसु मुंडू कुणीन छै आमरु छै आमरु छै, जय जोहार का नारा है भारत देश हमारा है, आमु आखा एक छै, जो जमीन सरकारी है वह जमीन हमारी है, बिरसा मुंडा की जय इत्यादि नारों के साथ आदिम आदिवासी समुदाय के वरिष्ठ जन, युवाओं व युवतियों द्वारा सैकड़ो की संख्या में नाचते-गाते हुए छायन पश्चिम में जय आदिवासी युवा शक्ति (जयस), आदिवासी परिवार द्वारा क्रांतिसूर्य महामानव, महायोद्धा वीर शहीद स्वतंत्रता सेनानी, धरती आबा क्रांतिकारी, आदिवासियों के मसीहा क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई एवं प्रतिमा स्थापित की गई।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित भंवरलाल परमार राजस्थान रहें, पोरलाल खरते इंदौर ने कहां, बिरसा मुंडा अपने आप में वैचारिक है, शब्दों में उन्हें समेट पाना संभव नहीं है। मात्र 25 साल की उम्र में देश तथा राष्ट्र के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। ब्रिटिश हुकूमत को नाको चने चबवाने वाले धरती आबा अपने उलगुलान की बदौलत इंसान से भगवान बन गए। उनके आंदोलन में लगभग एक लाख लोग मारे गए थे, बिरसा के आंदोलन से ही भूमि संपादन अधिनियम बना, इस अधिनियम में आदिवासी की जमीन गैर आदिवासी नहीं खरीद सकता, ऐसा प्रावधान है। हमारे गांव में हमारा राज, यह नारा बिरसा मुंडा ने ही दिया था। एक ओर वक्ता धर्मेंद्र डामर ने सरकार को आड़े हाथों लेते हुए कहा, इतने सालों से सरकार कहां सोई हुई थी जो आज जनजाति गौरव दिवस मना रहे हैं, हमें षडयंत्र पूर्वक कोई अन्य नाम ना दे। हम आदिकाल से इस धरती पर निवासरत धर्मपुर्वी आदिवासी हैं। जब धर्म नहीं बना था तब से आदिवासी इस धरती पर निवासरत हैं। अनुसूचित क्षेत्र के आदिवासियों के नाम पर आने वाले पैसे का दुरुपयोग सरकार द्वारा किया जा रहा है।

भीमा खोखर ने कहा कि, वैचारिक क्रांति का यह आलम बंद नहीं होना चाहिए। रेखा निनामा ने कहा, आदिवासियों की सबसे बड़ी समस्याएं शराब है, शराब पीना बंद करें समाज। डॉ के एस डामोर इंदौर, ध्यानवीर डामोर, रीना मौर्य, श्रीमति दीपिका मेड़ा इंदौर द्वारा समाजिक सभा को संबोधित किया गया। कार्यक्रम स्थल से रैली के माध्यम से मूर्ति स्थल तक पहुँचे समाज के वरिष्ठ एवं पुजारा बुवारसिह डामर, पुंजा गरवाल के निर्देशन तथा विधायक वालसिंह मेड़ा, सरपंच वैशाली नारायण ताड़ की उपस्थिति में प्रतिमा स्थापित की गई एवं 1 वर्ष पहले आदिवासी समाज के योद्धा भाई गोपाल कटारा का रोड़ एक्सिडेंट में देहांत हो गया था जिसके बाद परिवार पर आर्थिक संकट आ गया था, बिरसा जयंती के अवसर पर समाज के सभी युवाओं ने 10, 20 50, 100, 500 इक्ठे कर 20 हजार 5 सौ की आर्थिक सहायता की और गोपाल भाई की बड़ी बेटी सरस्वती कटारा को पढ़ाने की पूरी जिम्मेदारी प्रीतमसिंह मुणिया ने ली। डॉ कमल डामोर द्वारा ये आश्वाशन दिया कि, रतलाम जिले में किसी स्कूल में अगर ये बच्चे एडमिशन लेते हैं तो उनकी पूरी सहायता करेंगे, सभी युवाओं ने मदद कर गोपाल कटारा को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम सफल बनाने के लिए जिले के समस्त सामाजिक कार्यकर्ता एवं ग्राम के रोशन गरवाल, राजेन्द्र डोडियार, जयस जिला आईटी सेल प्रभारी कान्तिलाल गरवाल, प्रकाश वासुनिया , तोलसिह डामर, कैलाश वासुनिया, ईश्वर लाल गरवाल, धर्मेन्द्र डामर, सन्दीप वसुनिया, गजेंद्र सिंगाड एवं समस्त आदिवासी परिवार के युवाओं द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। आयोजन कार्यक्रम का संचालन सचिन गामड़ द्वारा किया गया, आभार दशरथ बारिया, खुशाल भाभर द्वारा किया गया।

माही की गूंज झाबुआ।

जमीन से दूर जाते भाजपा नेता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी और अटल बिहारी वाजपेयी को अपना आदर्श मानने वाली भाजपा इन दिनों माफ्रियाओं के कब्जे में है। नेता जमीनी कार्यकर्ताओं की पहुंच से दूर हो चुके हैं पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ता अपनी उपेक्षा से आहत होकर निष्क्रिय होकर घर बैठ चुके हैं और जो नेता है वह सत्ता के नशे में चूर होकर जमीनी हकीकत से दूर चले गए हैं। अभी हाल ही में संपन्न जनजातीय गौरव दिवस में झाबुआ जिले से सम्मिलित होने वाले कार्यकर्ताओं की कहानी तो कुछ ऐसा ही बयां कर रही है। तमाम कोषिषे पूरे प्रशासन के सहयोग तथा यात्रा में सभी सुविधाएं मुहैया कराने के बावजूद पूरे जिले में किसी बस में 8 तो किसी में 10 तथा किसी में 15 सवारी पहुंची। अपने आप को विश्व की सबसे बड़ी पार्टी कहने वाली भाजपा अपनी ही पार्टी द्वारा तय किए गए लक्ष्य के विरुद्ध 25 प्रतिषत भी कार्यकर्ता महाकुंभ के लिए नहीं भेज पाई। जबकि इसके लिए प्रदेश सरकार के साथ ही स्थानीय प्रशासन भी जी जान से जुटा था। अपनी असफलता छुपाने के लिए भाजपा नेताओं ने प्रशासन पर भी दबाव बनाया कि, वे आंकड़ों में हेरा-फेरी करें लेकिन वहां भी उनकी दाल नहीं गली। जबकि हकीकत यह है कि, भाजपा नेता आम जनता से लगातार दूर होते जा रहे हैं। प्रदेश स्तर से लेकर जिला स्तर और मंडल स्तर तक माफ्रियाओं की पकड़ मजबूत हो चुकी है और वे अपना धंधा चलाने के लिए नेताओं को हरा-भरा दिखाने का दावा करते हैं। वही हकीकत कुछ और ही है, प्रदेश स्तर पर भले ही सरकार दावा करें कि उन्होंने समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान के लिए भी योजनाएं बनाई है पर यह योजनाएं जमीनी स्तर पर नहीं पहुंच पाई है। आम जनता आज भी कोरोना संकट के बाद आर्थिक तंगी, महंगाई व भ्रष्टाचार से त्रस्त है और प्रदेश के मुखिया को तस्वीर कुछ और ही दिखाई जा रही है। इन ज्वंलत मुद्दों पर मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस की खामोशी भी आम जनता को चकित कर रही है। जनता को अब लगने लगा है कि दाल में काला नहीं पूरी दाल ही काली होती जा रही है।

शहीद भगवानलाल मिंडकीया के परिवार को नहीं मिल रही शासन की ओर से कोई सुविधा

शहीद के पिता का दुर्घटना में घायल होने के बाद हो चुका है निधन, खर्च हुए चार लाख, आर्थिक सहायता के लिए प्रशासन से लगाई गुहार, शहीद दिवस पर हर वर्ष होता है फोटो शेसन, 19 सौ रुपये पेंशन पर जी रहा शहीद का परिवार

तहसील कार्यालय पर मदद की गुहार लेकर सम्मान-पत्र के साथ पहुँची शहीद भगवानलाल मिंडकीया की मां नंदीबाई ।

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का बाकी यहीं निशा होगा।

ये लाइन उन शहीद जवानों के लिए है जिन्होंने सबसे ऊपर देश को रख अपनी जान देश की सीमाओं पर देश की सुरक्षा करते-करते दे दी लेकिन देश की सरकार देश के लिये प्राण न्यौछावर करने वाले जवानों के परिवार को सुविधा और सहयोग करने के कितने भी बड़े दावे कर ले वो जमीन स्तर पर केवल दिखावा मात्र है। आज भी देश के लिये जान दे चुके कई जवानों के परिवार वाले संघर्ष करते नजर आ रहे हैं, जिससे देश के जवानों को समर्पित ये खूबसूरत लाइने केवल पड़ने ओर सुनने में ही अच्छी लगती है, वास्तविकता और हकीकत से कोई लेना-देना नही है।

पेटलावद विकास खण्ड के तारखेड़ी ग्राम से सेना के त्रिपुरा रायफ्ल स्टेट कैडर में भर्ती युवा जोशिला जवान भगवानलाल मिंडकीया सेना में भर्ती होने के मात्र साढ़े तीन साल में ही आतंकियों से लोहा लेते हुए देश के लिए 23 जुलाई 2004 को अपने प्राण न्यौछावर कर गए। शहीद जवान की शादी तक नही हुई थी, परिवार ने जो सपने जोड़े थे वो सब आतंकियों की गोली के आगे धराशाई हो गए। जवान बेटे को खोने के बाद से शहीद का परिवार संघर्ष का जीवन जीने पर मजबूर है। बेटे की मौत के 17 वर्ष बाद भी परिवार वही संघर्ष करता नजर आ रहा है।

दुर्घटना में खो दिया पति, शाहिद की माँ ने शासन से लगाई मदद की गुहार, इलाज में खर्च हो गई जमा पूंजी

शाहिद भगवानलाल मिंडकीया का परिवार तारखेड़ी में ही निवासरत है और आज भी अपनी और अपने शहीद बेटे की पहचान के लिये संघर्ष कर रहा है। शासन की ओर से शहीद के परिवार को कोई स्वास्थ्य ,यात्रा, आवास, व्यवसाय हेतु भूमि की व्यवस्था नही की गई। तारखेड़ी बस स्टेशन पर शहीद की धूल खाती प्रतिमा को छोड़ दिया जायें तो, जिले के गौरव को आज तक मिलने वाला सम्मान कही मिलता नही दिखा। एक वाहन दुर्घटना में शहीद के पिता रामचंद्र मिंडकीया बुरी तरह घायल हो गए, जिनके इलाज के लिए परिवार ने अपनी सारी जमा पूंजी लगभग 4 लाख रुपये इलाज में खर्च कर दी, लेकिन फिर भी उनको बचाया नही जा सका और आखिर 31 जुलाई 2021 को शहीद के पिता ने अपने प्राण भी त्याग दिए। लोगो को जानकर आश्चर्य हुआ कि, शहीद के पिता के इलाज में खर्च होने वाली राशि परिवार ने स्वयं वहन करी और शासन की ओर से कोई सहयोग नही किया गया। शहीद की माता का कहना है कि, पति की गंभीर स्थिति के समय अधिकारी आये भी थे, लेकिन कोई सहयोग नही मिला। मंगलवार को शहीद की माँ नंदीबाई मिंडकीया ने तहसील कार्यालय पहुँच कर आर्थिक स्थिति खराब होने का हवाला लेकर पति के इलाज पर खर्च हुई राशि और आर्थिक सहयोग की गुहार लगाई। तहसीलदार की ओर से शहीद के परिवार को आश्वासन मिला है कि, वो जितना हो सकेगा मदद करने की कोशिश करेंगे, लेकिन ऐसा होगा भी या दूसरी फाइलों की तरह शहीद हुए जवान की माँ की गुहार फाइलों में दब कर रह जाएगी, ये देखना होगा।

19 सौ के लगभग मिल रही पेंशन, शहीद होने के बाद मिले मात्र 4-5 लाख

जवान बेटे के शहीद होने के बाद सरकार की ओर से जवान के परिवार को सुविधा के नाम पर चार लाख पचास हजार रुपये मिले थे और 1885 रुपये पेंशन शहीद की माँ को शुरू की गई, जो आज भी उतनी ही पेंशन दी जा रही है। न ही सरकार की ओर से न ही जागरूक जनप्रतिनिधियों की ओर से शहीद परिवार को कोई सुविधा देने के लिए प्रयास किया गया और परिवार का दूसरा बेटा चौकीदार के पद पर नौकरी कर स्वयं के परिवार और माता-पिता का भरण पोषण कर रहा है, अब पिता के निधन के बाद माँ की जिम्मेदारी उठा रहा है।

शहीद दिवस पर फोटो शेसन के लिए पहुँचते है नेता, पिता की मौत पर कोई जवाबदार नहीं पहुँचा परिवार के पास

परिवार किस हाल में है और जीवन मे किन संघर्षों से लड़ रहा है इस पर शायद किसी नेता या जनप्रतिनिधि का घ्यान नही गया हो, लेकिन भगवानलाल मिंडकीया के शहीद दिवस 23 जुलाई को क्षेत्र के नेता शहीद की प्रतिमा को फूलमाला पहना कर फ़ोटो शेसन कर परिवार से मिल कर निकल जाते हैं, अगले वर्ष फिर उसी दिन लौटते हैं। शहीद की पुण्यतिथि 23 जुलाई के ठीक 7 दिन बाद 31 जुलाई 2021 को शहीद के पिता का निधन होता है, लेकिन आसपास के छोटे-मोटे नेताओ को छोड़ दिया जाए तो विधायक या सांसद और प्रशासन कोई अधिकारी परिवार की सूद लेने नही गया।

शहीद की माता नन्दीबाई ने बताया कि, पति के निधन के पहले और बाद में किसी नेता या प्रशासन ने कोई सूद नही ली। हर छोटे-बड़े मामले में अपनी राजनीति चमकाने वाले नेता अपने क्षेत्र, अपने जिले से देश के लिए प्राण देने वाले जवान के परिवार के पास जाने के लिए दो मिनिट का समय नही निकाल पाए। यदि इस प्रकार से ही देश के लिए न्यौछावर होने वाले जवानों के परिवार की अनदेखी की जाएगी तो, सेना में कैसे लोग अपने बच्चों को देश सेवा के लिए भेजेंगे और कैसे क्षेत्र के युवा आगे आएंगे।

मोदी के नाम पर करोड़ो खर्च कर सकती है सरकार, शहीद के परिवार को इलाज नहीं दिला सकती

15 नवम्बर को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शहीद बिरसा मुंडा की जयंती पर गौरव दिवस मनाने के लिए भोपाल आए थे। जहां सरकार ने उनके आगमन के लिए करोड़ो रूपये केवल लोगो को लाने ले-जाने में फूंक दिए, जिससे किसी शहीद या उसके परिवार का भला नही हुआ और राजनीतिक हित पूरा किया गया। जबकि केवल झाबुआ जिले पर खर्च की गई राशि मे से मात्र 5 प्रतिशत राशि अगर शहीद भगवानलाल मिंडकीया के परिवार पर खर्च हुई होती तो आज शायद शहीद का परिवार खराब आर्थिक हालातो से नही जूझ रहा होता। सरकार और प्रशासन को चाहिए कि, शहीद भगवानलाल मिंडकीया के परिवार को हर वो सम्मान दिलाये जिसका वो असली हकदार है, ताकि उनकी आर्थिक स्थिति बेहतर हो सके। साथ ही न केवल पेटलावद विकास खण्ड बल्कि जिले भर में शहीद भगवानलाल के नाम से रोड, सरकारी भवन के नाम रख कर उनकी प्रतिमा स्थापित होनी चाहिए, ताकि देश सेवा के लिए मिल रहे सम्मान को देख कर युवा वर्ग और आने वाली पीढ़ी देश सेवा के क्षेत्र में काम करने का मार्गदर्शन पा सके।

सूचना अधिकार अधिनियम में आखिर क्यों नहीं दी जाती जानकारी...?

प्रदेश से लेकर केन्द्र की मोदी सरकार भ्रष्टाचार को खत्म कर दिया है का दावा कर रही है, असल में 1985 में पुर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का बयान सरकार एक रूपया भेजती है तो अंतिम छोर तक 15 पैसे ही पहुंचते है, आज भी सही साबित हो रहा है

माही की गूंज, झाबुआ। मुज्जमील मंसुरी

भारत के पूर्व युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 1985 में ओडिशा में अपने बयान में भ्रष्टाचार पर कहा था कि, सरकार 1 रुपया भेजती है तो लोगों तक 15 पैसे ही पहुंचते हैं, उसके बाद कई सरकारें आई और गई और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए नए नीत प्रयास किए। उसके साथ ही मनमोहन सिंह सरकार के समय 12 अक्टूबर 2005 में सूचना अधिकार अधिनियम भारत की संसद द्वारा कानून लागू हुआ। उक्त कानून भारत के सभी नागरिकों को सरकारी फाइलों,रिकॉर्ड में दर्ज सूचना को देखने और प्राप्त करने का अधिकार देता है।

सरकार के संचालन और अधिकारियों, कर्मचारियों के वेतन व किसी भी मद में खर्च में होने वाली राशि का प्रबंध भी हमारे-आपके द्वारा दिए गए हर आम आदमी के करो से ही किया जाता है। यहां तक कि एक मजदूर अपनी मजदूरी कर या एक रिक्शा चलाने वाला व्यक्ति भी खरीदी गई सामग्री के रूप में टेक्स चुकाता है, इसीलिए सूचना अधिकार अधिनियम में हर किसी को यह जानने का अधिकार है कि, उस धन को किस तरह से खर्च किया जा रहा है और यह हमारा मौलिक अधिकार भी है। 12 अक्टूबर 2005 में हमारे देश की संसद में लागू हुआ सूचना का अधिकार अधिनियम(आरटीआई) का मूल उद्देश्य ये भी है कि सरकार और प्रशासन कहीं न कहीं भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने पर जीरो ग्राउंड तक पहुंच पाने में असफल हो रही थी, नतीजन जीरो ग्राउंड तक हो रहे भ्रष्टाचार पर हर आम व्यक्ति की नजर रहे ओर विकास को गति देने के लिए आरटीआइ लागू किया गया। उक्त नियम के साथ ही ऐसी गाइडलाइन जारी की गई की आरटीआई के तहत जानकारी मांगने पर समय पर संबधित अधिकारी को अनिवार्य रूप से जानकारी देना आवश्यक है। जानकारी नहीं देने पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय अपील का प्रावधान किया गया। साथ ही अपील में जानकारी देने के साथ ही जिस अधिकारी ने समय अवधि में जानकारी नहीं दी उसके विरुद्ध भी कार्रवाई का प्रावधान किया गया। वहीं आरटीआई में मिली मय प्रमाणित प्रती के आधार पर किसी भी कार्य या व्यवस्था में अनियमीयता व भ्रष्टाचार पाए जाने पर उक्त मामला मीडिया के माध्यम से उजागर होने या उसकी शिकायत होने पर प्रशासन को त्वरित कार्रवाई करने का भी प्रावधान किया गया।

शासन की मंशा से भारी भ्रष्टाचार का बोलबाला, नहीं दी जाती जानकारी

केंद्र की मोदी सरकार से लेकर प्रदेश की शिवराज सरकार भले ही राजीव गांधी के बयान, एक रुपया सरकार भेजती है तो 15 पैसे का उपयोग होता है के जवाब में अपने तर्क देती है कि, पिछली सरकार में भ्रष्टाचार का बोलबाला था ओर हमने भ्रष्टाचार पर पूर्ण लगाम लगाकर पूरा का पूरा पैसा आम लोगों की सुविधा व विकास में रुपयो का उपयोग हो रहा है। जबकि धरातल पर अभी भी राजीव गांधी के एक रुपये जारी होकर 15 पैसे ही धरातल पर पहुंच रहे हैं बयांन हीं सही साबित हो रहे हैं।

नतीजन विकास की मुख्य धुरी ग्राम पंचायत होती है और ग्राम पंचायत से ही भ्रष्टाचार का इतना बड़ा बोलबाला है कि, हमारी कलम भी सारे भ्रष्टाचार को लिखकर अंकित करने में असमर्थ साबित हो जाए। वही भ्रष्टाचार पर आरटीआई लागू होने के बाद स्थानीय स्तर पर युवा व जनमानस जागरूक हुआ। भ्रष्टाचार पर हर स्तर पर अंकुश लगे कि, नियत के साथ स्थानीय किए गए कार्यो की जानकारी मांगी जाती है, तो कलेक्टर और जिला पंचायत के सीओ साहब तक अनियमियताओ व भ्रष्टाचार की इस श्रंखला में ऐसे सहभागी है कि उनसे भी कोई जानकारी आरटीआई में मांगी जाती है तो नहीं मिलती है, तो उनके अधीनस्थ अधिकारी सूचना अधिनियम के तहत जानकारी सही तरीके से पूरी-पूरी दे दी जाए यह उम्मीद करना तो शायद बेमानी होगी। नतीजन शासन की मंषा पर भारी भ्रष्टाचार का बोलबाला होकर जमकर भ्रष्टाचार हो रहा है। वही प्रदेश सरकार से केंद्र सरकार तक भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में असमर्थ साबित होकर आरटीआई को ध्वस्त कर दिया गया है।

जिसके कई उदाहरण हमारे सामने है जैसेः- झाबुआ जिले की ग्राम पंचायत बामनिया में हाट बाजार में लगने वाली दुकानों से की गई वसूली की जानकारी मांगी गई लेकिन 5 माह के बाद भी नहीं दी।

यही के यशवंत डामोर ने ग्राम पंचायत द्वारा किए जा रहे निर्माण कार्य के संबंध में जानकारी मांगी जो भी कई महीने से अधर में है। पेटलावद से चेक डेम व शौचालय के निर्माण की जानकारी जनपद पंचायत पेटलावद से मांगी गई जिसे भी अधर में अटका रखा।

जामली से बलराम पाटीदार ने ग्राम पंचायत में पिछले 5 वर्षों में किए गए विकास कार्यों की जानकारी मांगी गई, लेकिन यह भी जानकारी भ्रष्टों द्वारा नहीं दी जा रही।

राहुल गोस्वामी ने रायपुरिया में बने सीसी रोड की जानकारी मांगी तो वह भी नहीं दी गई। यहां तक कि राहुल गोस्वामी ने जिला सीओ से सरपंच को जारी धारा 40 के अंतर्गत नोटिस किस अनियमियताओ एवं भ्रष्टाचार के लिएं जारी किया गया की जानकारी मांगी, तो भी वह नहीं मिली। इतना ही नहीं ग्राम पंचायत द्वारा अनियमियताओ पर झाबुआ कलेक्टर ने ग्राम पंचायत को कारण बताओ नोटिस जारी किए, उक्त कारण बताओ नोटिस किस अनियमियताओं के तहत कलेक्टर द्वारा जारी किए गए की जानकारी मांगी, लेकिन यहां से भी सूचना अधिकार अधिनियम के तहत कलेक्टर कार्यालय से भी जानकारी नहीं दी जा रही।

झकनावदा ग्राम पंचायत में अन्य जानकारियों के साथ सूचना अधिकार के कार्यकर्ता ने झकनावदा पंचायत से जानकारी मांगी कि क्षेत्र में किन-किन बंगाली डॉक्टरों का पंजीयन किया गया और किस प्रमाणित दस्तावेज प्राप्त कर स्थानीय निवासी का प्रमाण पत्र दिया गया की प्रमाणित प्रतिया मांगी, जो भी अभी कई महीनों से अधर में है।

कोदली पंचायत से गौरसिंह कटारा ने सी.सी मार्ग की जानकारी मांगी जो भी नहीं दी गई।

कईड़ावद ग्राम पंचायत से विभिन्न बिंदुओं एवं विकास कार्यों की जानकारी मांगी तो यहां के भ्रष्ट नुमाइंदो ने एक बिंदु पर ही जानकारी मांगी जाए का पत्र जारी कर अपने कार्य की इतिश्री कर दी गई।

थांदला जनपद की ग्राम पंचायत खवासा से 12 मई 2020 को नामजद बंगाली के नाम से जानकारी मांगी गई कि, पंजी रजिस्टर में किस प्रमाण-पत्र के आधार पर खवासा का मुल निवासी बनाया गया मकान नंबर के साथ प्रमाणित प्रति मांगी, साथ पंजीयन के बाद वे बंगाली देष के किस ग्राम में कब से यहां से जा कर निवास करते है कि जानकारी मांगी। जानकारी नही देने पर प्रथम अपील थांदला जनपद कार्यालय मे 15 अक्टुबर 2020 को परन्तु अब तक कोई जानकारी नही दी।

खवासा क्षेत्र की ग्राम पंचायत नाहरपुरा से 15 फरवरी 2021 को, 1 अप्रैल 2015 से 31 मार्च 2020 तक के वित्तिय वर्षों की जानकारी में केसबुक व बाउचर फाइल बिलो की प्रमाणित प्रति मांगी गई लेकिन यहां भी सूचना अधिकार में जानकारी मांगने वाले युवा कार्यकर्ता दिनेश कटारा को जानकारी नहीं दी गई। मामले में थांदला जनपद सीईओ रामचंद्र हालु ने भी ग्राम पंचायत सचिव को आदेश पारित किए कि मांगी गई जानकारी संबंधित व्यक्ति को दी जाए। परंतु सचिव द्वारा कोई जानकारी नहीं दी गई। जिसके बाद लोक सूचना अधिकारी पुष्पा डाबी ने अपनी खानापूर्ति करते हुए 12 अगस्त को पत्र क्रमांक 1967 पर सचिव भूरालाल झोड़िया को आर.टी.आई 2005 की धारा 6(1) के अंतर्गत जानकारी प्रदान करने के संबंध में थांदला जनपद कार्यालय पर अपील की सुनवाई हेतु 23 अगस्त को उपस्थित होने हेतु आदेश जारी किया। वही आरटीआई मे उक्त जानकारी प्राप्त करने हेतु कलेक्टर सोमेश मिश्रा के पास पहुंचा और जानकारी प्रदान करवाने हेतु निवेदन किया, लेकिन कलेक्टर ने एक सिरे से कनी काट कह दिया, यह काम मेरा नहीं है जिला पंचायत सीओ साहब के पास जाओ। जिसके बाद सीओ साहब के पास पहुंचा जहां भी सीओ साहब ने दिनेश कटारा को कह दिया, जो हमारा काम था वह हमने कर दिया आप थांदला जाओ थांदला सीईओ साहब आपको जानकारी देंगे। 23 अगस्त को दिनेश कटारा थांदला जनपद कार्यालय पहुंचा तो यहां भी जनपद सीईओ हालू ने जानकारी देते हैं बैठो, कहकर पूरे दिन बिठा रखा। परंतु शाम होने के बाद कह दिया सचिव नहीं आया तो हम क्या करें और बिना जानकारी के ही रवाना कर दिया। जब फोन कर पुष्पा डाबी से चर्चा की, तो वह भी सीधे मुंह जवाब नहीं दे रही। ऐसे ही कई मामलो की जानकारी आरटीआई कार्यकर्ताओ ने जिले मे जानकारी माग रखी हे परन्तु इस तरह से गुमराह कर जानकारी नही दी जा रही है। इस तरह से भ्रष्टों की दाढ़ी में तिनका नहीं, बल्कि पूरी की पूरी दाढ़ी ही गले- गले तक भ्रष्टाचार में डूबी है, इसलिए आरटीआई के तहत जानकारी नहीं दी जाती है यह सौ आनी सच है।

इतना ही नहीं कुछ जानकारी आरटीआई कार्यकर्ताओं को दी भी जाती है तो उसमें भी अपनी कारस्तानियो को दिखाने में कोई चूक नहीं करते जैसेः- एक प्रतिलिपि की 10-10 फोटोकॉपी कर इतनी राशि जमा करने के लिए बता देते हैं कि, आरटीआई कार्यकर्ता पैसा भरने में असमर्थ होकर जानकारी प्राप्त ना कर सके।

वही पैसा भरकर जानकारी दी जाती है तो उसमें भी कई मुख्य जानकारी देते ही नहीं हैं और जो प्रतिलिपि दी जाती है वह भी बिना हस्ताक्षरित होकर प्रमाणित प्रतियां नहीं होती है। उक्त ऐसी प्रतिलीपिया अनियमित्ता व भ्रष्टाचार के विरुद्ध आरटीआई कार्यकर्ता जनहित में न्यायालय की शरण में जाता है, तो मान्य नहीं रहती है। ऐसे में प्रदेश की शिवराज सरकार व केंद्र की मोदी सरकार भ्रष्टाचार को खत्म करने के दावे लोगों को गुमराह करने में ही साबित हो रहे हैं। अगर वास्तविक में सरकार भ्रष्टाचार को खत्म करना चाहती है, तो आरटीआई के तहत समय अवधि में हर आम व्यक्ति को जानकारी उपलब्ध करवाये और कोई भी अधिकारी उपरोक्त स्थितियां उत्पन्न करता है तो उसे नौकरी से बर्खास्त करने का प्रावधान बनाएं जाए। ताकि आरटीआई के तहत जानकारी प्राप्त होकर भ्रष्टाचार के मुद्दे उजागर होने पर सरकार व शासन-प्रशासन त्वरित उन मुद्दों पर कार्रवाई करती है की व्यवस्था की जाए तो ही भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए सरकार अपनी एक सीढी चढ सकती है। वरना अब भी या आगे भी राजीव गांधी द्वारा 1985 में दिया गया बयान धरातल पर रहेगा और आम लोगों के खून-पसीने का पैसा भ्रष्टाचार की भेंट ही चढ़ता रहेगा...।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422